चन्दामामा
सितम्बर १९९१
4
RS

Biku, John, Abik, Salim. All waiting for their birthdays. For their PORSCHE
Mine was yesterday.
PORSCHE
SAMMO
CHANDAMAMA TOYTRONIX
Mfd. by :
Chandamama Toytronix Pvt. Ltd.
Chandamama Buildings
188, NSK Salai, Vadapalani,
Madras - 600 026.
Remote-Control PORSCHE Toy Car
For the first time in India
Indigenously manufactured
Design from SAMMO of South Korea
FROM THE HOUSE OF CHANDAMAMA

ना-ना करता रहेगा ऐसे,
तो बढ़ेगा कैसे ?

PARRY'S PAGE

जा दू सी खो जा दू

ारे दर्शको, अरे, रे, रे, मतलब कि प्यारे दोस्तो. हमारे हाथों में यह हैट
ौर यह छोटा डंडा देख रहे हो न! जरा दिमाग दौड़ाओ, क्यों है
, क्या कहा? जादू दिखाने के लिए? भई, मान गए. बड़े तेज
तुम. पिछली मुलाकात के बाद से हम सब - कैरेमिल्क,
ॉफीबाइट, ट्राय मी और मैं, जोरदार जादूगर हो गए हैं.
र अफसोस, हम तुम्हें जादू
खाएं कैसे? खैर, कोई बात नहीं.
ादू के कुछ खेल हम तुम्हें सिखा
े हैं. तुम भी दोस्तों को दिखा
र उन्हें हक्का बक्का कर
कते हो.

याद रहे: दोस्तों को यह ट्रिक दिखाने से पहले प्रैक्टिस खूब करनी पड़ेगी.

(चित्र-२ में यह दिखाया गया है कि तुम
सामने खड़े दोस्तों को तुम्हारा अंगूठा कै
दिखेगा). अंगूठा झटपट वापस लगा देना वरना
डर के कोई चीख पड़ेग

क्लिप ग्रिप

फुट स्केल जितनी लंबी और चौड़ाई में उसकी दुगनी, कागज की पट्टी ले लो. अब इसे इस तरह मोड़ लो और इसमें दो पेपर क्लिप इस तरह लगा दो. इसके बाद मंत्र पढ़ो -"अंकी - फाई - फो - फम"और कहो,

'क्लिप जो अछूते थे वो एक हो गए हैं मिल करके वो.' यह खेल दिखाते वक्त कागज के दोनों कोने जरा कस के खींचने चाहिए. तभी पेपर क्लिप ज्यादा ऊंचे उछलेंगे और जब नीचे गिरेंगे तो

थंबथिंग स्केयरी

हथेली को अपनी तरफ रखते हुए, अपना बायां हाथ इस तरह सामने लाओ कि उंगलियां दाहिनी ओर को रहें और अंगूठे का ऊपरी जोड़ नीचे की तरफ को मुड़ा हो (चित्र-१). दूसरे हाथ के अंगूठे का ऊपरी हिस्सा इसके सामने रख कर दोनों के जोड़ को दाएं हाथ की पहली उंगली से ढक दो (चित्र-२). अब अगर तुम दायां हाथ, बाएं हाथ की पहली उंगली के साथ सरकाओगे तो लगेगा कि तुमने अंगूठे के ऊपरी हिस्से को अलग कर डाला है.

तो दोस्तो, इस बार के लिए इतना काफी
यूं तो जादुई करामातों की हमारे पास कमी
लेकिन यहां जगह है कहां? हमें उम्मीद है
अपने दोस्तों और परिवार वालों को ये जादू दिख
में तुम्हें बड़ा मजा आएगा. हमें चिट्ठी लिखना
भूलना और बताना कि क्या मस्ती रही. तुम्हारे
दोस्त कॉफीबाइट,
कैरेमिल्क, ट्राय मी
और मैं (हम) भी वह
सब पढ़ कर खुश होंगे.

अच्छा, फिर मिलेंगे.

MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI
CLUB
मैगी क्लब से मुफ़्त उपहार पाओ, मौज-मस्ती के रंग जमाओ!
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल हो जाओ, सारे साल मौज मनाओ.
न्यूज़ लैटर्स, उपहार, गेम्स और मौज-मस्ती की कई अन्य चीज़ें...
बस तुम यह मैगी नूडल्स के
5 खाली रैपरों के सामने के हिस्से से काटकर हमें भेज दो.
और, साथ में अपना नाम, पता और अपनी पसंद का उपहार भी
लिख भेज़ना. हां, अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य हो तो सदस्यता
संख्या भी ज़रूर लिखकर भेजना. और, अगर तुम मैगी क्लब के
सदस्य नहीं हो तो अब मौका मत चूकना. अपना विवरण भेजते
समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. हम तुम्हारे उपहार
के साथ मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे!
हमारा पता है:
मैगी क्लब
पो. ओ. बॉक्स 5788
नई दिल्ली-110 055
'मैगी ऑप्रेशन वाइल्डलाइफ गेम'
द्वारा वन्य प्राणियों की रक्षा करो.
'मैगी जादू जंगल'
से अपना जंगल बनाओ.
Archie
आर्ची कॉमिक!
KING OF THE JUNGLE
'मैगी किंग ऑफ़ दी जंगल गेम'
में जंगल की सैर करो
TO LET
'मैगी बर्डहाउस'
बनाओ
मुफ्त! मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' विवरण पुस्तिका.
तुम जो 3 उपहार इकट्ठे करोगे
तो उनके साथ हम तुम्हें मुफ्त
मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स'
विवरण पुस्तिका भेजेंगे. उसमें
तुम्हें मिलेगी वन्य-प्राणियों
के बारे में दिलचस्प और
आश्चर्यजनक जानकारी,
हर गेम में पूरा विवरण
देख लेना.
MAGGI
2-minute noodles
FAST TO COOK! GOOD TO EAT!
Name:
Membership no.:
एक और मौका! अगर तुमने 'लॉज ऑफ द जंगल गेम' अभी तक नहीं लिया है तो अब ले लो!

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

शिक्षा – मजबूत आधार की ज़रूरत

हमारे मौजूदा प्रधान मंत्री नरसिंह राव जब राजीव गाँधी मंत्रिमंडल में शिक्षा मंत्री थे तो उन्होंने ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्धारित की थी । नई केंद्रीय सरकार ने अब जब कि घोषणा की है कि यह १९८६ में चालू की गयी आधारभूत शिक्षा नीति ही अपनायेगी, तो इसमें कोई अचंभा नहीं होना चाहिए ।

शिक्षा को आम तौर पर परिवर्तन का साधन माना जाता है । विष्णु शर्मा का उदाहरण हमारे सामने हमेशा ताज़ा रहेगा । उसकी देख-रेख में तीन राजकुमार थे जिन्हें राजपाट संभालना था । विष्णु शर्मा को उन्हें सही सांचे में ढालना था । उसने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो तरीका अपनाया, वह था उन्हें कहानियां सुनाना, जिन्हें बाद में 'पंचतंत्र' के रूप में इकट्ठा किया गया ।

स्पष्ट है कि शिक्षा का उद्देश्य बदलाव लाना है व्यक्ति में, और उसके माध्यम से समाज में और सामाजिक संस्कृति में । सच्ची शिक्षा वही है जिससे किसी व्यक्ति के समूचे व्यक्तित्व का विकास हो ।

दुर्भाग्यवश, अब चारों ओर यही कहते सुना जाता है कि शिक्षा अपने उद्देश्य में पूरी नहीं उतर सकी । हम यह तो भली भांति जानते हैं कि मांग और उसकी पूर्ति में हमेशा एक अनुपात होता है । हमारे स्कूलों और कालेजों से हर साल हज़ारों की तादाद में छात्र पढ़कर निकलते हैं । लेकिन उनके लिए मांग तो बहुत ही कम है । इधर यह अनुमान लगाया गया है कि किसी स्नातक की शिक्षा पर जितना खर्च आता है, उससे अस्सी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा दी जा सकती है । इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि प्राथमिक शिक्षा सब तक पहुंचायी जाये और इससे साक्षरता बढ़ायी जाये । हमारी शिक्षा को उस उल्टे स्तूप की तरह नहीं रहना है जिसका कोई आधार नहीं ।

वर्ष : ४४ — सितम्बर १९९१ — अंक : १

एक प्रति : रु. ४/- — वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चॉकलेट अब एक नए रंग-रूप,
नए स्वाद में!
दूधिया सफ़ेद चॉकलेट आज़माइए! स्वादभरा मज़ेदार फ़र्क पाइए. ऐसा लाजवाब स्वाद आपको और कहीं नहीं मिल सकता. कैम्पको व्हाइट क्रीमी चॉकलेट... चखकर देखिए, मान जाएंगे!!
भारत के सबसे बड़े सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.
Campco
कैम्पको लिमिटेड
बैंगलोर
Campco
white
Creamy Chocolate
TOP QUALITY LOW PRICE
Campco chocolates
Milk
White
Treat
TURBO
Eclairs
Fun Bite
Playtime
TOFFEE
Campco beverages
WINNER
R K SWAMY/BBDO CL 9321

कंबोदिया में शांति लौट रही है ।

१२ वर्ष के गृह-युद्ध के बाद कंबोदिया में आखिर शांति लौटती दिखाई दे रही है । वहां के तीनों विद्रोही गुटों ने नोम पेह्न सरकार के साथ एक समझौता कर लिया है, जिसके तहत वे सर्वोच्च राष्ट्रीय परिषद् में हिस्सा लेंगे । परिषद् की पहल संयुक्त राष्ट्र की तरफ से हुई है, क्योंकि उसी का वहां शांति स्थापित करने का ज़िम्मा है ।

कंबोदिया का दूसरा नाम कंपूचिया है । यह पहले फ्रांस के अधीन हिंद-चीन का एक भाग रहा । फिर दूसरे विश्व-युद्ध में जापानियों ने जब समर्पण किया, तब यह वापस फ्रांस को चला गया, लेकिन जब १९५३ में फ्रांसीसी वहां से हटे, तब इसे पूर्ण स्वतंत्रता मिल गयी ।

लेकिन राजकुमार नरोत्तम सिंहनख का लोकप्रिय शासन १९७० में एकाएक खत्म हो गया, क्योंकि लोन नोल ने उन्हें अमरीकी सहायता से गद्दी से उतार दिया । तब राजकुमार देश से बाहर चले गये । पांच साल बाद खमेर रूज़ नाम के एक छापामार गुट ने लोन नोल का भी तख्ता पलट दिया । खमेर रूज़ गुट के लोग तीन साल तक सत्ता में रहे, और उस बीच भुखमरी और कत्लो-ग़ारत के परिणामस्वरूप लगभग दस लाख लोगों ने

अपनी जानें खोयीं। और तो और, पड़ोस के वियतनाम ने भी वहां चढ़ाई कर दी और १९७९ में हेंग समेरन की अध्यक्षता वाली सरकार थोप दी। बाद में वियतनाम ने अपनी फौजें वहां से हटा लीं, लेकिन इसका परिणाम यह हुआ कि वहां बारह वर्षों तक विद्रोह ही विद्रोह होते रहे, जिससे वहां की कृषि पर आधारित अर्थ-व्यवस्था चौपट होती गयी।

अभी इन्हीं दिनों इंडोनेशिया की राजधानी जकर्ता और थाईलैंड की राजधानी पटाया में कुछ वार्तालाप हुआ है। अब समझौता यह हुआ है कि तीनों छापामार गुट, जिनमें राजकुमार सिंहनख की सेनाएं, खमेर रूज़ तथा खमेर पीपल्स नेशनल लिबरेशन फ्रंट के लोग शामिल हैं, वहां की सर्वोच्च राष्ट्रीय परिषद् में हिस्सा लेंगे। राजकुमार सिंहनख परिषद् के अध्यक्ष होंगे और वर्तमान प्रधानमंत्री हुन सेन उपाध्यक्ष।

राजकुमार सिंहनख ने घोषणा की थी कि वह नवंबर के महीने में ही अपने देश को लौट सकेंगे। इसलिए अब इस परिषद् की बैठक अगस्त के महीने में, थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में होगी।

भारत का कंबोदिया के प्रति हमेशा लगाव रहा है। वहां पर संसार का सबसे बड़ा मंदिर-समूह है जिसे अंगकोट वाट कहते हैं। अब तो वहां भग्नावशेष ही हैं, लेकिन कहा जाता है कि इसका निर्माण बारहवीं सदी में हुआ था और यहां के मंदिर हिंदू देवताओं को समर्पित थे। मंदिरों के अलावा वहां बौद्ध विहार और महल भी थे। अंगकोट पुराने खमेर साम्राज्य की राजधानी था।
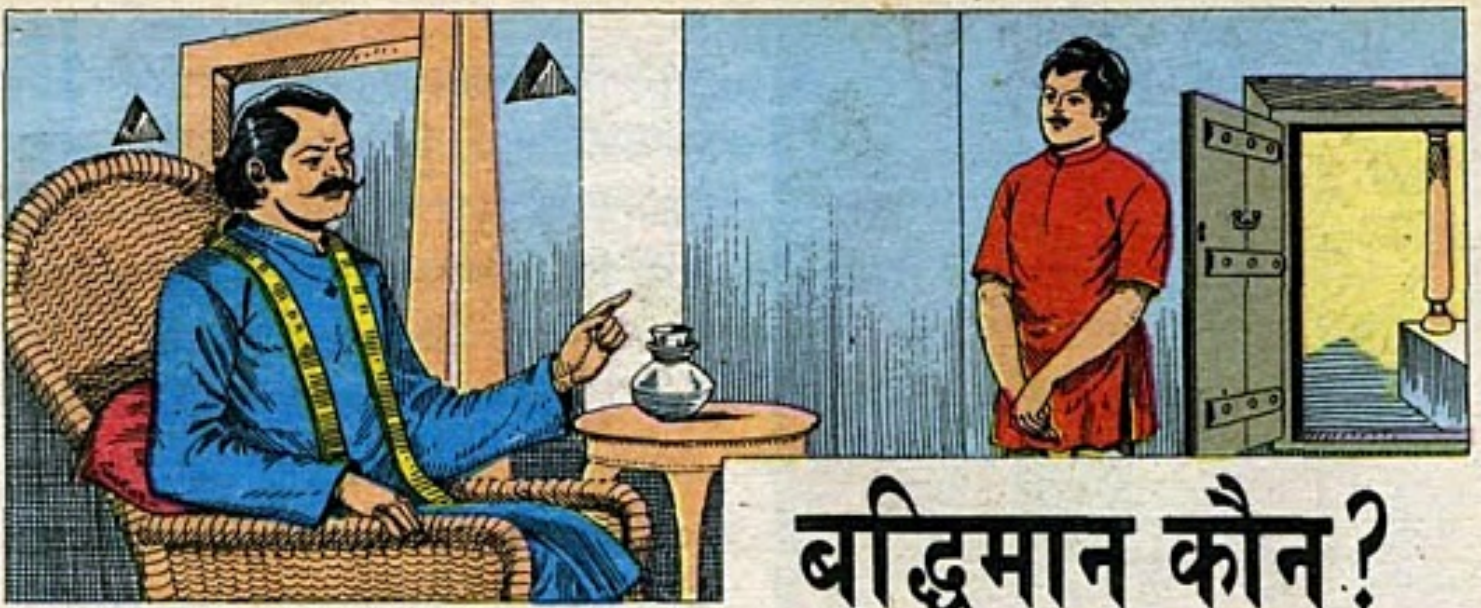
बुद्धिमान कौन?

एक ज़मींदार था भूषण। भूषण को ज़मींदारी का लेखा-जोखा देखने के लिए एक व्यक्ति की ज़रूरत पड़ी। उधर युवा वीरेंद्र को जब पता चला कि ज़मींदार को लेखा-जोखा देखने वाले एक व्यक्ति की ज़रूरत है, तो वह उससे मिलने गया।

वीरेंद्र जब ज़मींदार के यहाँ पहुंचा तो ज़मींदार उससे बोला, "ठीक है, पहले यह फैसला हो जाना चाहिए कि हम दोनों में से कौन अधिक बुद्धिमान है। तभी मैं तुम्हें काम पर रखूंगा। बहरहाल, पहले तुम मेरे दो काम करके दिखाओ। शिवमंदिर वाले महल्ले में राम झा नाम का एक व्यक्ति रहता है। दो साल पहले उसने मुझ से दो सौ मुहरें कर्ज़ ली थीं, पर आज तक उसने उन्हें चुकाया नहीं। मैंने उसे कर्ज़ बिना सूद दिया था। इसका एहसान भी उसने नहीं माना। अब उससे यह रकम वसूल करना मुश्किल हो गया है। यह काम मेरे बस का नहीं। अगर तुम इसमें कामयाब रहते हो तो फिर मैं तुम्हें बाकी के काम बताऊंगा।"

"आप कुछ देर के बाद राम झा के यहां आ जायें। आपकी रकम की वसूली हो जायेगी।" वीरेंद्र ने ज़मींदार को उत्तर दिया और फिर वह सीधे राम झा के घर जा उससे बोला, "भाई राम, अचानक दो सौ मुहरों की ज़रूरत पड़ गयी है। मैं तुम्हें सौ मुहरों पर दस मुहरें हर महीने सूद दूंगा। इसी के मुताबिक मैं तुमसे लिखा-पढ़ी भी कर लूंगा। इस वक्त मुझे कर्ज़ देकर मेरी मदद करो।"

राम झा सूद के लालच में आ गया। वह दूसरे कमरे में गया और दो सौ मुहरें ले आया। फिर वह उन्हें वीरेंद्र को देते हुए बोला, "तुम रकम गिनो, मैं इस बीच ऋणपत्र तैयार करता हूं।"

जिस समय वीरेंद्र मुहरें गिन रहा था, उसी

मोहिनी सिंह
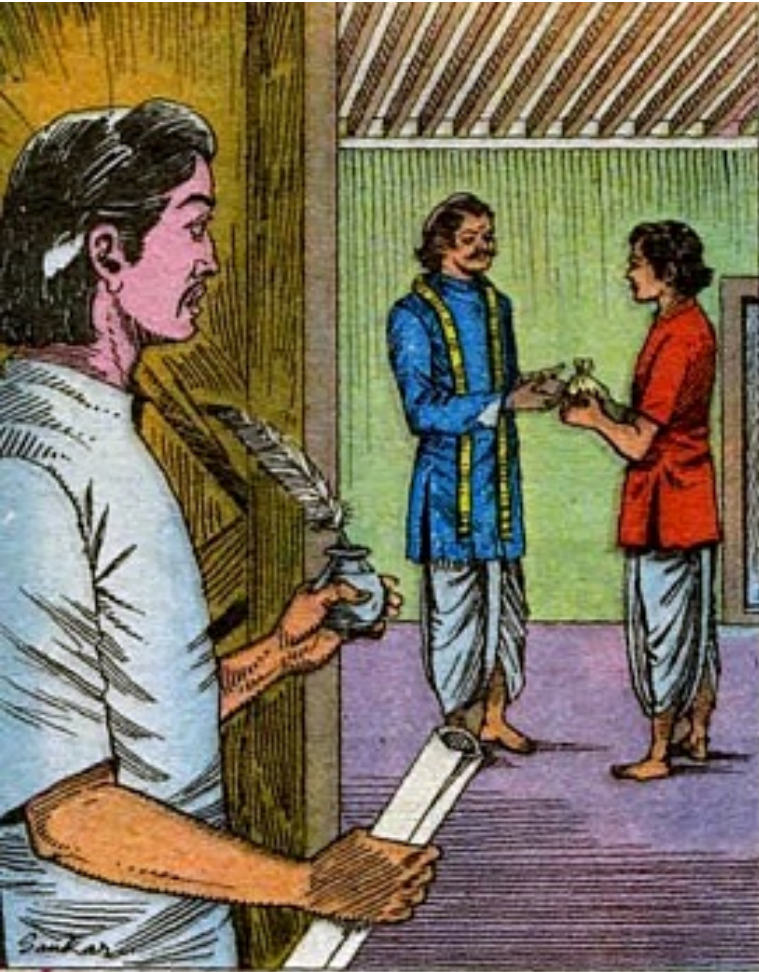
समय वहां ज़मींदार भूषण आ पहुंचा। ज़मींदार भूषण को देखकर राम झा घबरा गया। लेकिन वीरेंद्र की नज़र जैसे ही ज़मींदार पर पड़ी, वैसे ही वह बोला, "उफ़! मैं असली मुद्दा तो भूल ही गया; अपने ही चक्कर में पड़ा रहा। ज़मींदार साहब ने तो मुझे यहां कर्ज़-वसूली के लिए भेजा था।"

फिर अपने हाथ की रकम उसने ज़मींदार भूषण के हाथ पर रख दी और बोला, "मालिक, ठीक से गिन लीजिए, पूरी दो सौ मुहरें हैं!"

भूषण वीरेंद्र की चातुरी पर हैरान था। उधर राम झा मारे घबराहट के बेहाल हुआ जा रहा था। फिर अपनी घबराहट को किसी तरह छिपाते हुए वह बोला, "वीरेंद्र, यह रकम मैंने ज़मींदार साहब का कर्ज़ चुकाने के लिए ही ज़मा की थी। तुम्हारी ज़रूरत देखकर मुझे तरस आ गया और मैंने सोचा कि चलो, किसी तरह तुम्हारा काम पूरा कर दूं। अब तुम्हें कर्ज़ देने के लिए मेरे पास एक भी मुहर नहीं बची। तुम अपनी व्यवस्था कहीं और कर लो।"

वीरेंद्र की सफलता पर ज़मींदार भूषण बहुत खुश था। उसने उसकी खूब सराहना की और बोला, "देखो, इस गांव में मेरे दो घर हैं। एक में मैं रहता हूं और दूसरे में मेरा किरायेदार सुरेंद्र । सुरेंद्र हर महीने मुझे बराबर किराया दे रहा है, लेकिन मैं अब यह घर खाली करवाना चाहता हूं। तीन हफ्तों में मेरी बेटी और दामाद यहां आ जायेंगे और वे यहीं रहेंगे। उनके आने तक यह घर हर हालत में खाली हो जाना चाहिए। मैं यह काम अब तुम्हारे ज़िम्मे छोड़ रहा हूँ।"

वीरेंद्र ने बिना वक्त खोये सुरेंद्र से भेंट की, और उससे बात करने के बाद उसे पता चला कि सुरेंद्र ईमानदार तो है, पर अड़ियल भी कुछ कम नहीं। उसका कहना था कि ज़मींदार ने जब उसे घर खाली करने के लिए कहा था तो किन्हीं अपशब्दों का प्रयोग किया था। इसलिए वह जल्दी घर खाली नहीं करेगा। दूसरे, ज़मींदार से उसकी लिखा-पढ़ी भी हुई थी जिस के अनुसार सुरेंद्र दो वर्षों तक उस मकान में रह सकता था।

सुरेंद्र के तर्क से वीरेंद्र कुछ सोच में पड़ गया और कोई रास्ता नहीं सूझा तो उसने

उसके साथ दोस्ती बढ़ानी शुरू कर दी और तीन दिन तक उसके साथ दोस्ताना ढंग से घूमता रहा । बाद में वह रोज़ उसके यहां कुछ-न-कुछ सामान के साथ पहुंचता और और उसके परिवार के साथ मिलकर खाता । इस सामान में कभी मिठाई होती, कभी फल और कभी कुछ और । सुरेंद्र के बच्चे वीरेंद्र को मामा कहकर पुकारने लगे ।

इस बीच वीरेंद्र गांव के साहूकार से मिला और उससे बोला, "सुरेंद्र अपना घर बदलना चाहता है । क्या आप उसे अपना घर किराये पर दे सकते हैं?"

साहूकार का एक घर बहुत दिनों से खाली पड़ा था । वीरेंद्र को इसका पता चल गया था और तभी उसने यह सवाल उठाया था । उधर साहूकार को कोई किरायेदार नहीं मिल रहा था, इसलिए वीरेंद्र के प्रश्न करने पर साहूकार एकाएक खुश हो गया ।

"सुरेंद्र विचित्र स्वभाव का है । जो सोचता है उसे फौरन पूरा कर डालना चाहता है । आप इस घर की चाभियाँ मेरे हाथ में दें ।" वीरेंद्र ने साहूकार को समझाते हुए कहा ।

थोड़ी देर के बाद वीरेंद्र सुरेंद्र के यहां पहुंचा और उससे बोला, "मैं देख रहा हूं कि यह मकान अब तुम्हारे लिए शुभ नहीं रहा । तुम लोग और कुछ दिन यहां रहे तो किसी प्रेतात्मा की चपेट में आ सकते हो । मेरी बात मानो । मैं तुम्हारी भलाई ही चाहता हूं न! साहूकार का मकान खाली पड़ा है । तुम लोग वहीं चले जाओ ।"

वीरेंद्र अब तक सुरेंद्र के बीवी-बच्चों से काफी घुल-मिल गया था । उन्होंने उसके मुंह से जब ऐसी बात सुनी तो वे भयभीत-से हो गये । लेकिन सुरेंद्र ज्यों का त्यों बना रहा और बोला, "बच्चू, मैं तुम्हारी चालाकी समझता हूँ । ज़रूर तुम्हें ज़मींदार ने सिखा-पढ़ाकर भेजा है । यह घर खाली नहीं करूंगा । ज़मींदार ने जो मेरे साथ लिखा-पढ़ी की थी, वे कागज़ात अब भी मेरे पास सुरक्षित हैं," और यह कहकर उसने वीरेंद्र को किरायेनामा दिखाया ।

वीरेंद्र ने उस किरायेनामे को पढ़ा । फिर बोला, "मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही कह रहा हूँ । अब मेरी बात मानना या न मानना

तुम पर है । मेरा क्या है, मुझे तो कोई हानि होने वाली नहीं ।" और यह कहते-कहते वीरेंद्र ने मिठाई का एक डिब्बा खोला और सबको मिठाई बांटने लगा ।

मिठाई में नशे की दवा मिली हुई थी । इसलिए जैसे ही परिवार के लोगों ने वह मिठाई खायी, सब के सब बेहोश हो गये । तब वीरेंद्र ने ज़मींदार की मदद से गाड़ियों और आदमियों का इंतज़ाम किया और सुरेंद्र का सारा सामान साहूकार के घर पहुंचा दिया, और फ़िर उसे पहले की तरह सजा भी दिया । बाद में सुरेंद्र के परिवार के सदस्यों को भी नये मकान में ले आया गया और वहां उन्हें पलंगों पर लिटा दिया गया ।

इस बीच वीरेंद्र ने सुरेंद्र के किरायेनामे को भी फाड़ दिया था । जब सुरेंद्र को होश आया तब उसे पता चला कि उसके साथ तो बहुत बड़ा धोखा हुआ है । पर अब वे नये घर में थे । उसने सोचा कि ज़मींदार से लड़कर अब मिलेगा भी क्या, वह चुप रहा ।

अपना घर वापस पाकर ज़मींदार बहुत खुश हुआ । उसने वीरेंद्र की भरपूर प्रशंसा की । लेकिन साथ ही बोला, "तीसरा काम है, मेरी पत्नी को एक दिन का मौनव्रत करवाना । बढ़िया से बढ़िया साड़ियां, जेवारों की आशा उसे दी, लेकन उसे मौन नहीं कर सका ।"

वीरेन्द्र उसी शाम को ज़मींदार भूषण की पत्नी से मिला और बोला, "मां जी, यह बड़े काम का तावीज़ है । इसे दायें हाथ में बांधकर यदि आप एक दिन मौनव्रत रख सकें तो आपका आसपास के लोगों पर प्रभव बढ़ेगा, या आप के आसपास के लोगों का प्रभाव ज़रूर घटेगा । आप की मान्यता होगी ।"

भूषण की पत्नी ने इस तरह जब एक दिन पूरी तरह मौनव्रत रखा तो भूषण हैरान रह गया । वह वीरेन्द्र से बोला, "मैंने अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर तुमसे अपना हर मुश्किल काम हल करवा लिया । इसलिए तुमसे बढ़कर मैं ही बुद्धिमान हूँ । इसीलिए अब मैं तुम्हें काम पर नहीं रख सकता ।"

भूषण की बात से वीरेंद्र घबराया नहीं । बोला, "हुज़ूर, आपका कहना शत-प्रतिशत ठीक है । लेकिन आपने जो कारण बताया है, मैं उससे सहमत नहीं हूँ । दरअसल, बात यह

है कि कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति अपने से बढ़कर बुद्धिमान व्यक्ति को अपने यहाँ काम पर नहीं रखता । आप अब समझ गये होंगे कि मैं बुद्धि में आपसे बढ़कर हूँ । इसीलिए आप मुझे काम पर नहीं ले रहे हैं । यदि आप यह स्वीकार कर लें तो मैं आपसे काम नहीं मांगूंगा । असलियत स्वीकार करने में आपको आनाकानी नहीं करनी चाहिए ।''

भूषण ने वीरेंद्र के तर्क से सहमति दिखायी और बोला, ''तुम वाकई मुझसे बुद्धि में एक नंबर पर हो । अब तुम आज़ाद हो । तुम्हारी बुद्धि तुम्हें कहीं भी दूसरा काम दिलवा देगी । मैंने पहले ही निर्णय कर लिया था कि जो व्यक्ति मुझसे परीक्षा में हार जायेगा, मैं उसी को काम दूँगा, जीतने वाले को नहीं ।''

भूषण ने अभी अपनी बात मुश्किल से पूरी की ही थी कि घर के भीतर से भूषण की छोटी बेटी अमला बाहर आयी और अपने पिता से बोली, '' पिताजी, आप ही ने तो कहा था कि जो व्यक्ति आप से बुद्धि में श्रेष्ठ रहेगा, आप उसी से मेरी शादी करेंगे । वीरेंद्र ने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रखा था, लेकिन मैंने उसे साफ-साफ कह दिया था कि मैं उससे शादी तभी कर सकती हूँ जब वह अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करने में श्रेष्ठ रहेगा । इसीलिए वीरेंद्र ने यह प्रयास किया और वह सफल रहा । अब आप कृपया हमारी शादी कर दीजिए ।''

भूषण अब बिलकुल निरुत्तर था । वह वीरेंद्र से बोला, ''वाकई मुझे अब तुम्हारा लोहा मानना पड़ेगा । तुम्हारी बुद्धि का कोई जवाब नहीं । तुमने इसी बुद्धि के बल पर मेरी बेटी का दिल जीता । वह अब तुमसे शादी करना चाहती है । मैं अब इससे इंकार नहीं कर सकता ।''

वीरेंद्र की ज़मींदार भूषण की बेटी अमला से शादी हो गयी, और वीरेंद्र बड़े गर्व से ज़मींदार भूषण का दामाद बन गया ।

आखिरी अवसर

बात पुरानी है । देवप्रिय नाम के धर्माचार्य हमेशा यही प्रचार किया करते थे कि देवभक्ति में लीन रहो, अहिंसा को प्रयोग में लाओ, दूसरे के धर्म के प्रति सहिष्णुता बरतो तथा समूची मानवता को समान समझो ।

उनका एक विरोधी भी था । उसका नाम था यशकाम । यशकाम हमेशा हिंसा, नास्तिकता इत्यादि का ही प्रचार करता । वह और भी कई घिसी-पिटी मान्यताओं का प्रचार करता । इससे देवप्रिय और यशकाम के बीच एक प्रकार का संघर्ष-सा छिड़ गया । उनके बीच बैर-भाव भी पनपने लगा ।

एक बार देवप्रिय बीमार पड़े और दिन-ब-दिन मौत की ओर खिंचते चले गये । उन्हें मिर्गी के दौरे भी पड़ते थे । तब वह ऐसी हालत में होते कि उनके लिए किसी से मिल पाना असंभव हो जाता । फिर भी उन्होंने एक बार यशकाम से मिलने की इच्छा व्यक्त की । यशकाम को यह सुनकर बड़ा अचंभा हुआ । वह देवप्रिय से मिलने उनके यहां पहुंचा ।

मौत के कगार पर पहुंचे धर्माचार्य देवप्रिय को देखकर यशकाम ने प्रश्न किया, "आचार्य, बड़ी हैरानी हुई तुम्हारी इस इच्छा के बारे में जान कर । तुम तो किसी से मिलना ही नहीं चाहते थे! तब मुझ से अपनी इन आखिरी घड़ियों में मिलने की तुम्हें यह क्या सूझी?"

यशकाम का प्रश्न सुनकर धर्माचार्य देवप्रिय धीमे से मुस्करा दिये और बोले, "इस दुनिया को छोड़ने के बाद मैं किसी से भी स्वर्ग में मिलने की आशा कर सकता हूं । लेकिन इस दुनिया को छोड़ने के बाद मैं तुम से मिलने की आशा नहीं कर सकता, क्योंकि तुम स्वर्ग में नहीं जाओगे । इसीलिए तुम्हें यह आखिरी अवसर दे रहा हूं ।"

—सुजना गुप्त

अपूर्व के पराक्रम

[अपूर्व, जो एक योगी की यज्ञाग्नि में से प्रकट हुआ था, एक बहुत नन्हा-सा प्राणी था । उसका शरीर छोटा-सा था, लेकिन उसके विचार बहुत ऊँचे थे । उसके पास अद्भुत शक्ति थी । उसके जीवन का उद्देश्य क्रूरता और बुराइयों सें लड़ना था—अब आगे....]

"समीर ।"

समीर एकदम चौंका और एकाएक अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गया । यह आवाज़ तो उसके रक्षक अपूर्व की थी! रात के इस पहर तो वह इसे सुनने की बिलकुल ही उम्मीद नहीं करता था ।

यद्यपि अपूर्व बहुत ही नन्हा प्राणी था, लेकिन समीर ने उसे फौरन देख लिया और फिर झुककर बड़े प्रेम से उसका अभिवादन किया ।

"समीर, क्या तुम थोड़ी तकलीफ उठाने को तैयार हो? अगर तैयार हो तो तुम्हारी कुछ सेवा चाहिए ।" अपूर्व ने प्रश्न किया ।

मैं तो आपके लिए अपनी जान भी दे सकता हूँ!" समीर ने पूरे विश्वास के साथ उत्तर दिया ।

"मेरी खातिर नहीं, समीर, बल्कि उन पांच बालकों की खातिर—जिनकी जान अब खतरे में है!"

"आप मुझे जो भी कहेंगे मैं करूँगा । आप

में उतर गया । फिर जैसे ही उसने गति पकडी, समीर अपने को बहुत हल्का महसूस करने लगा । उसे लगा जैसे कि वह हवा में उड़ता जा रहा हो । बड़े हौसले से वह अपूर्व के साथ चलता रहा ।

दोनों ही बहुत तेज़ी से समुद्र के तट पर पहुंचे । संगम से थोड़ा ही हटकर, जहां नदी समुद्र में मिलती थी, एक जहाज़ लंगर डाले खड़ा था ।

"पांच बालक यहां थे और वे पिकनिक मना रहे थे । स्वाभाविक था कि जहाज़ के बारे में उन्हें उत्सुकता होती । जहाज़ के कप्तान ने उन्हें बड़े प्यार से जहाज़ पर चढ़ आने को कहा । वह उन्हें विभिन्न कक्षों में ले गया और फिर उन्हें बताया कि पाल कैसे फहराया जाता है और लंगर कैसे डाला जाता है । जब बालकों ने उसके प्रति आभार जताते हुए इसका अनेक बार धन्यवाद किया और समुद्रतट पर लौटना चाहा तो उसने उन्हें कुछ पीने को दिया । देखते ही देखते ये बालक गहरी निद्रा में खो गये । अब यह जहाज़ यहां से जल्दी ही रवाना होने वाला है ।" यह सूचना अपूर्व ने समीर को दी और फिर बोला, "इनका इरादा इन बालकों को किसी दूर के टापू की मंडी में गुलामों की तरह बेचना है । यह तो इन बच्चों के लिए बड़ी मुसीबत है ।"

"आपको यह सब कैसे पता चला?" समीर ने प्रश्न किया ।

"मैं यहीं था जब इन्हें एक छोटी नाव द्वारा जहाज़ पर ले जाया गया । मुझे कप्तान की

की इच्छा मेरे लिए आज्ञा है । आप के आदेश पर काम करने में बड़ा मजा आता है । अवश्य आज्ञा दीजिए ।" समीर ने एक बार फिर अपनी बात पर जोर देते हुए कहा ।

तब अपूर्व ने उसे बताया कि वक्त गंवाया नहीं जा सकता, समीर को फौरन उसके साथ चलना होगा । समीर की माँ उसे भेजने को तैयार न थी, लेकिन जब उसे पता चला कि यह वही फरिश्ता है जिसने समीर की जान बचायी थी और अब वह उससे कुछ मदद चाह रहा है, तो उसे विश्वास हो गया कि उसके बेटे को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं हो सकती । तब उसने समीर को सहर्ष जाने की अनुमति दी ।

समीर अपूर्व का हाथ थामे-थामे अंधेरे

नीयत पर पहले ही शक था । जैसे ही वे जहाज़ पर पहुंचे मैं भी वहां पहुंच गया । मैं अपने आपको उनसे छिपाये रहा, लेकिन उनकी हर हरकत पर मेरी नज़र थी और जो कुछ वे कह रहे थे, मैं सब सुन पा रहा था । यों मैं इनके इरादे समझ गया ।"

"लेकिन आप जहाज़ पर पहुंचे कैसे?"

"उसी तरह जैसे अब हम दोनों पहुंचेंगे । तुम उसी प्रकार बालकों का मार्ग-दर्शन करते रहोगे जैसे जैसे मैं तुम्हें छिपकर, चुपके-चुपके इशारा करता रहूंगा । जब तक मैं कुछ सूचना न दूं तब तक तुम्हें सिर्फ इन बच्चों के साथ रहना मात्र है ।"

"आप तो अपने को आराम से छिपा लेंगे, लेकिन मैं क्या करूंगा?" समीर ने प्रश्न किया ।

"तुम अपने को छिपा नहीं सकते । तुम ऐसे ही दिखावा करोगे जैसे कि तुम उन बंदी बालकों में से एक हो । अपना स्वतंत्र अस्तित्व किसी पर ज़ाहिर न होने पाए । जहाज़ के कर्मचारियों में इन बालकों की संख्या को लेकर आपस में कुछ घपला मचेगा, लेकिन उसका तुम मज़ा लेना । अब बोलो, यात्रा के लिए तैयार हो?"

"बिलकुल तैयार हूं ।" समीर बोला ।

अपूर्व ने समुद्र की दिशा में देखते हुए सीटी बजायी । फौरन पानी उछालती हुई और बड़ी-बड़ी लहरों से ऊपर उठती हुई चार डॉल्फिन मछलियां समुद्र तट के निकट आ पहुचीं । "चलो," अपूर्व ने समीर को

थोड़ा-सा धकियाते हुए कहा । अपूर्व और समीर, दोनों, दो डॉल्फिनों पर सवार हो गये । बाकी की दो डॉल्फिनें संरक्षक के नाते उनके साथ-साथ तैरने लगीं ।

"आप इन डॉल्फिनों को किस तरह ऐसे तैयार कर सके?" समीर ने प्रश्न किया ।

"मैंने इन्हें तैयार नहीं किया । लेकिन एक बात समझ लो कि समूची प्रकृति में एक सार्वभौम आत्मा व्याप्त है । सभी प्राणियों के बीच से एक डोर सी होकर जाती है जो कि बहुत ही सूक्ष्म होती है । ये प्राणी चाहे मानव हों, या पशु, या पक्षी । अगर तुम उस डोर को छूकर किसी प्राणी तक कोई संदेश पहुंचाओ, और अगर तुम्हारी नीयत ठीक है तो वह प्राणी तुम्हें ज़रूर उत्तर देगा । मैं उसी सूक्ष्म डोर के

माध्यम से इन प्राणियों तक अपना अनुरोध पहुंचाता हूँ ।'' अपूर्व ने विस्तार से बताया ।

''क्या आप इंसानों के दिलों में भी इस तरह की सहयोग की भावना जगा सकते हैं?''

''सभी इंसानों के दिलों में नहीं, क्योंकि इंसान प्रकृति का अनुसरण नहीं करते, उन पर उनकी बुद्धि हावी रहती है । यह बुद्धि बहुत ही पेचीदा है । इसमें कई तरह के संदेह, विचार और प्रश्न अटे पड़े रहते हैं । लेकिन जो इनसान बहुत सीधे सादे हैं, और सच्चाई का दामन पकड़ते हैं, या वे जो अपनी बुद्धि के सहारे न चलकर आत्मा का सहारा लेते हैं, वे मेरी आवाज़ सुन सकते हैं ।'' अपूर्व ने उत्तर दिया ।

वे जहाज़ तक पहुंच चुके थे। वहां बिलकुल अंधेरा था । अपूर्व ने बहुत धीमे से डॉल्फिन मछलियों का धन्यवाद किया । फिर वे दोनों जहाज़ पर चढ़ गये ।

उन्होंने एक कमरे की खिड़की में से झांककर देखा । पांचों के पांचों बालक सोये पड़े थे । उस पेय का अब भी उन पर असर था । कमरे पर ताला पड़ा था ।

अपूर्व और समीर, दोनों, आगे बढ़े, बहुत धीरे से । उन्हें अंधेरे का लाभ भी मिला । फिर उन्होंने दूसरे कमरे में झांका । जहाज़ का कप्तान अपने सहायकों से सलाह-मशिवरा कर रहा था । केबिन में बड़ी तादाद में तलवारें, भाले, बर्छियां और लाठियां पड़ी थीं । समीर को अब विश्वास हो गया कि यह जहाज़ समुद्री लुटेरों का है, और यह कप्तान उन लुटेरों का सरदार है ।

''हमें बिना देर किये यहां से रवाना हो जाना चाहिए ताकि इन बालकों के माँ-बाप इन्हें ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यहाँ तक न पहुंच जायें ।'' सरदार ने कहा ।

''आ भी जायें तो क्या होगा? हमारी इजाज़त के बिना वे जहाज़ पर तो चढ़ नहीं सकते ।'' लुटेरों में से एक बोला । वह दूसरे दर्जे का सरदार दिखाई देता था ।

''मैं नहीं चाहता कि फिजूल के संदेहों में हम फँसें । जिनसे बचा जा सकता है, बचना चाहिए ।'' सरदार ने ऐंठते हुए कहा ।

अब वे लुटेरे जहाज़ के ऊपरी हिस्से पर आ गये थे । अपूर्व और समीर एक अंधेरे कोने में छिप गये । सरदार की हिदायत के अनुसार

जहाज़-कर्मचारियों ने लंगर उठाया और जहाज़ चलने लगा । सरदार ने उस कमरे का ताला खोला जिसमें बालक लेटे हुए थे । ''अब इनके लिए बचने का कोई रास्ता नहीं है, जब तक कि ये समुद्र में कूद ही न जायें और शार्क मछलियों का भोजन बनें ।'' छोटे सरदार ने खींसे निपोरते हुए कहा, और फिर दोनों दरवाज़े से हट गये ।

अपूर्व ने समीर के कान में फुसफुसाया, ''जल्दी से भीतर जाओ और इन बालकों के बीच चुपके से लेट जाओ । हमारे पास समय नहीं है ।''

समीर फौरन उस कमरे में घुस गया ।

''तुम इन्हें कहां बेचना चाहते हो? रत्नद्वीप में?'' छोटे सरदार ने पूछा ।

''नहीं, मैं एक छोटा-सा टापू जानता हूँ । वहां की मंडी में इन्हें बेचूँगा । वहाँ तीन-चार जगहों से गुलामों के व्यापारी आते हैं । हम उनसे भाव-ताव कर सकते हैं । हमें इनसे एक अच्छी-खासी रकम मिल जानी चाहिए ।'' सरदार ने कहा ।

कमरे के भीतर थोड़ी-सी आवाज़ हुई । छोटे सरदार ने मुड़कर भीतर झाँका । लालटेन की रोशनी बहुत धीमी थी । वह कमरे में गया और बत्ती को थोड़ा ऊंचा कर दिया ।

''इनमें से हरेक की सौ-सौ मुहरें तो मिल ही जायेंगी । यानी कुल मिलाकर पांच सौ मुहरें ।'' सरदार बोला ।

''मैं नहीं समझता था कि तुम्हारा हिसाब इतना कमज़ोर है! सौ को छः से गुणा करें तो

पांच सौ नहीं होते हैं!''

''उल्लू! तुम मूर्ख के मूर्ख रहे । वे कुल पांच हैं, छः नहीं ।''

''वे छः हैं, छः!''

''यह छठा कहां से आ गया? हवा में से?''

''भीतर आओ और खुद गिनो ।'' छोटे सरदार ने चुनौती दी ।

सरदार कमरे में दाखिल हुआ और उसने खुद गिना । वाकई, छः हैं, पाँच नहीं । उसने लालटेन अपने हाथ में लीया और सोये हुए बालकों के चेहरों को ग़ौर से देखा । फिर उसने उन्हें बार-बार गिना ।

छोटा सरदार हंसा । ''चिंता मत करो, गुरु! जितने ज़्यादा होंगे, उतना ही बढ़िया मुआवज़ा होगा । जहां पाँच सौ मुहरें आनी

थीं, वहां अब छः सौ आयेंगी । लेकिन हाँ, तुम्हें मुझे उल्लू कहकर पुकारने के लिए माफी मांगनी होगी । अब तो साफ हो गया न कि असली उल्लू कौन है!"

सरदार ने एकाएक अपनी कमर पर बंधी पेटी में से छुरा निकाला और उसे धमकाते हुए बोला, "तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मुझे उल्लू कहो!"

"मैंने तुम्हें उल्लू नहीं कहा । तुमने मुझे उल्लू कहा था । मैं तो सिर्फ यह सम्मान लौटाये दे रहा हूँ!" छोटे सरदार ने उसे चिढ़ाते हुए कहा ।

"मैं तुम्हें एक बार नहीं, सौ बार उल्लू कहूँगा ।" सरदार ने अपनी आवाज़ ज़्यादा ऊंची करते हुए कहा । तब तक उनके गिरोह के कई और लोग भी वहां आ जुटे थे । बड़े सरदार और छोटे सरदार के बीच खुल्लम खुल्ला झगड़ा होते देख वे दंग रह गये । उन्हें यह तो काफी अर्से से पता था कि दोनों सरदार एक दूसरे से नफ़रत करते हैं, लेकिन उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं था कि उनकी आपसी दुश्मनी एकाएक इतनी मुखर हो उठेगी । लेकिन अभी एक उससे भी बड़ा अचंभा उनका इंतज़ार कर रहा था ।

"अपना यह जंग खाया छुरा किसी और को दिखाना । मैं उन गँवारों में से नहीं हूँ जो तुम्हारी धमकियों में आ जायेंगे!" छोटे सरदार की आवाज़ भी उतनी ही ऊंची थी ।

"जंग खाया छुरा? यही तुम्हें दिख रहा है? चखाऊं तुम्हें इसका मज़ा?" बड़ा सरदार छोटे सरदार की तरफ छुरा उठाये-उठाये एक कदम सरका ।

छोटा सरदार एक कदम पीछे हट गया । तब उसने बिजली की-सी फुर्ती से छिपाकर रखी अपनी तलवार उठायी और सीधे बड़े सरदार की छाती में घोंप दी । सरदार एकदम से चीखा और फिर चित्त हो गया ।

गिरोह के सदस्य हक्के-बक्के रह गये । उनमें से कोई नहीं हिला । किसी ने अपने मुंह से एक शब्द नहीं निकाला ।

चारों तरफ चुप्पी व्याप रही थी । उस चुप्पी को ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए छोटे सरदार ने तोड़ा । वह अपने साथियों को संबोधित करता हुआ बोला, "वह इसी का हक़दार था । तुममें से किसी को यह भूलना नहीं

चाहिए कि इसनें हमारे पुराने सरदार के साथ क्या किया था । इसने उसे बहुत बुरी तरह से धोखा देकर मारा । पहले उसे शराब पिलाकर धुत किया । क्या मैंने ऐसा कोई धोखा किया है? मैंने तो अपनी तलवार का इस्तेमाल सिर्फ अपने को बचाने के लिए किया, उसे मारने के लिए नहीं । दूसरे, यह तो अपनी साही समझबूझ खो बैठा था! क्या ए से व्यक्ति को हमारा सरदार होना चाहिए जो छः को पांच समझता हो?"

फिर उसने अपने कुछ विश्वासपात्र सहायकों से कहा कि इस लाश को उठाकर समुद्र में फेंक दिया जाये । उसके इस आदेश पर किसी ने कोई आपत्ति नहीं की । अब दो-तीन व्यक्ति तो उस लाश को घसीट रहे थे और बाकी जहाज़ की छत पर बिखरे खून को धो रहे थे ।

इस झगड़े से बालकों की आंख भी खुल गयी थी । उन्होंने जैसे ही खिड़की में से बाहर देखना चाहा, समीर ने फौरन लालटेन को बुझा दिया । फिर उनके कान में फुसफसाते हुए बोला, "तुम्हें ये समुद्री लुटेरे उठाये लिये जा रहे हैं । वे तुम्हें गुलामों की तरह बेच देंगे । मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ, तुम्हें बाहर निकालना चाहता हूँ । तुम मुझे अपना दोस्त ही समझो । जैसा मैं कहता हूँ, वैसा ही करो । अब पहले की तरह लेट जाओ और यही ज़ाहिर करो कि तुम सोये हुए हो । ऐसा मत ज़ाहिर होने दो कि तुम्हें इनके इरादों की कोई भनक है, या अभी जो झगड़ा हुआ है उसमें उनके सरदार का खून हो चुका है । इससे हमें मदद मिलेगी । अगर उन्हें पता चल गया कि हम उनके इरादे जानते हैं तो वे हमें कैदी बनाये रखेंगे ।"

बालकों के काटो तो लहू नहीं । लेकिन वे समीर के एक-एक इशारे का पालन कर रहे थे, और अब वे सब वहां पहले की तरह लेट गये थे । (जारी)

प्रतिकार

राजा विक्रम अपने इरादे से डिगे नहीं थे। वे उसी पुराने पेड़ के निकट पहुंचे, उसकी एक शाखा से लटकती लाश को उन्होंने उतारा और अपने कंधों पर डाल लिया। फिर वह चुपचाप हमेशा की तरह श्मशान पार करने लगे।

तब उस लाश में मौजूद बैताल बोला, "राजन्, आधी रात का यह समय है, कहीं सांप फुंकार रहे हैं, और कहीं उल्लू अपनी तरह की आवाज़ें निकाल रहे हैं। आप इस सब की परवाह किये बिना अपनी राह चले जा रहे हैं। ज़रूर इस का कोई खास कारण होगा। शायद आप कुछ साधना चाह रहे हों। लेकिन उसकी प्राप्ति के बाद भी राजा अग्निसिद्ध की तरह आप अयोग्य और हानि पहुंचाने वाले व्यक्तियों को रोक पायेंगे, इसका मुझे शक हो रहा है। इसलिए मैं आपको चेतावनी दे रहा हूँ। और इसी उद्देश्य से मैं आपको अग्निसिद्ध की कहानी

बैताल कथाएं

सुनाने जा रहा हूँ, ताकि आप चेत जायें और आपका ध्यान बंटने से आपको थकान भी न हो, और साथ-साथ, आपका रास्ता भी कट जाये।" फिर बैताल वह कहानी सुनाने लगा:

अग्निशिखा राज्य पर राजा अग्निसिद्ध का राज्य था। अग्निशिखा के पड़ोस में विशाल नाम का राज्य था। इन दोनों राज्यों के बीच कई पीढ़ियों से शत्रुता चली आयी थी। इसलिए अग्निसिद्ध को राज्य की आय से कहीं अधिक राशि राज्य की सुरक्षा पर खर्च करनी पड़ती।

एक बार काफी सोच-विचार करने के बाद राजा अग्निसिद्ध ने विशाल के राजा को एक शांति-संदेश भेजा। संदेश में कहा गया था कि दोनों राज्य अपनी पुरानी शत्रुता भूलकर आपस में मैत्री-संबंध कर लें। लेकिन विशाल के राजा सोमदत्त ने मूर्खता की और इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। साथ ही खबर भेजी— आपके दादा-परदादा ने हमारे वंश को जो हानि पहुंचायी, वह भुलायी नहीं जा सकती।

कुछ साल ऐसे ही बीत गये। एक दिन सोमदत्त शिकार के लिए निकला और वहां किसी दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गयी। सोमदत्त के बाद उसका पुत्र सत्यदीप विशाल देश का राजा बना। वह शांतिप्रिय था। वह चाहता था कि दोनों राज्यों के बीच शत्रुता खत्म हो और आपस में अच्छे संबंध क़ायम हो जायें। उन्हीं दिनों उसे पता चला कि अग्निसिद्ध की एक बेटी भी है जिसका नाम स्वयंप्रभा है।

स्वयंप्रभा सुंदर थी और सुशिक्षित थी। सत्यदीप ने सोचा कि यदि उसका स्वयंप्रभा से विवाह हो जाता है तो विशाल और अग्निशिखा के बीच शांति और मैत्री स्थापित हो सकती है।

अपने भाव व्यक्त करते हुए सत्यदीप ने एक संदेश-वाहक के हाथों राजा अग्निसिद्ध को एक पत्र भेजा। पत्र पढ़कर अग्निसिद्ध बहुत खुश हुआ। इसलिए अग्निसिद्ध ने फ़ैसला किया कि उसकी पुत्री स्वयंप्रभा का विवाह सत्यदीप से ही होगा।

लेकिन अग्निसिद्ध के पुत्र सिंहस्कंध को अपने पिता का यह फ़ैसला मंजूर नहीं था।

शत्रु को अपनी कन्या देकर उससे रिश्ता जोड़ना अपमान नहीं तो और क्या है! लेकिन उसने अपना यह विचार अपने तक ही रखा ।

युवराज सिंहस्कंध के निकट रहने वाले राजपरिवार के कुछ सदस्यों ने सिंहस्कंध के मन की बात जान ली । उन्होंने इस स्थिति का फायदा उठाना चाहा और सिंहस्कंध के मन में विषैले बीज बोने शुरू कर दिये । उन्होंने किसी-न-किसी तरह से यह बात सिंहस्कंध के भीतर उतार देनी चाही कि इस तरह सत्यदीप द्वारा स्वयंप्रभा का हाथ मांगने के पीछे ज़रूर कोई चाल होगी । उनका यह भी कहना था कि राजा अग्निसिद्ध द्वारा ऐसे प्रस्ताव का फौरन स्वीकार किया जाना मतिभ्रम नहीं तो और क्या है । उनका यह भी कहना था कि यदि सिंहस्कंध मौन रहा तो अग्निशिखा राज्य का नाश अटल है ।

सिंहस्कंध के मन की कुढ़न बहुत बढ़ गयी थी । उसने एक योजना बनायी । वह अपने पिता को सिंहासन से हटाकर स्वयं सिंहासन पर बैठना चाहता था । योजना के अनुसार राजा अग्निसिद्ध को आधी रात के समय बंदी बना लिया गया और उसी शुभ मुहूर्त में सिंहस्कंध सिंहासन पर बैठ गया ।

बंदीगृह में पड़े-पड़े राजा अग्निसिद्ध को, जो कुछ घटा था, उस पर बड़ा दुःख हुआ । वह समझ गया कि इस तरह का कदम सिंहस्कंध अपने से नहीं उठा सकता, ज़रूर कुछ षड्यंत्रकारी उसके पीछे रहे होंगे, और उन्हीं की सलाह से यह दुष्कर्म किया गया होगा । ऐसी ही बातों का सिलसिला अग्निसिद्ध के मस्तिष्क में चलता रहा ।

सिंहस्कंध ने सिंहासन पर बैठते ही सत्यदीप को कहला भेजा कि उसकी बहन से शादी का उसका प्रस्ताव मात्र ढकोसला है, और यह एक प्रकार से उनकी पीठ में छुरा घोंपना है । दादा-परदादा के समय से चली आ रही शत्रुता का बदला तो चुकाना ही होगा । इसलिए वह उसे दंड दिये बिना नहीं रह सकता, और उसे युद्ध के लिए तैयार हो जाना चाहिए ।

सिंहस्कंध का यह संदेशा पाकर सत्यदीप बहुत दुःखी हुआ । उसने फैसला किया कि वह सिंहस्कंध को एक बार ज़रूर मज़ा चखायेगा और उसे युद्ध में हराकर अग्निसिद्ध

को फिर सिंहासन पर बैठाएगा ।

इस बीच अग्निशिखा राज्य की जनता ने सिंहस्कंध के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । उनसे यह बर्दाश्त नहीं हुआ कि राजा अग्निसिद्ध को युवराज क़ैद में डाल दे और खुद सिंहासन संभाल ले । विद्रोह का नेतृत्व रविचंद्र नाम का एक युवक कर रहा था ।

सिंहस्कंध ने सोचा कि पहले विद्रोह को दबा दिया जाये और फिर शत्रु से निपटा जाये । इसलिए उसने रविचंद्र को अपनी हिरासत में लेने की सरतोड़ कोशिश करनी शुरू कर दी ।

जब सत्यदीप को सूचना मिली कि अग्निशिखा राज्य में विद्रोह फैल गया है, तो उसे युद्ध शुरू करने का वही उपयुक्त समय लगा । उसने बिना विलंब किये अपने दुश्मन पर हमला बोल दिया । सिंहस्कंध गहरी दुविधा में पड़ गया । उसके आगे-पीछे खतरा ही खतरा था, यानी आगे बावड़ी और पीछे गड्ढ़ा । उसे उकसाकर जिन षड्यंत्रकारियों ने उसे राज-सिंहासन पर बैठाया था, वही अब उसीके विरुद्ध षड्यंत्र करने लगे । उनकी योजना अब यह थी कि यदि सिंहस्कंध युद्ध में हार जाता है तो वे सत्यदीप से समझौता कर लेंगे और उनमें से कोई एक अग्निशिखा का राजा बन जायेगा । सिंहस्कंध को जब उसके बहुत गुप्तचरों ने इस षड्यंत्र की सूचना दी तो वह फौरन समझ गया कि उससे बहुत बड़ी गलती हुई है । उसने उन तमाम षड्यंत्रकारियों को फौरन बंदी बनाकर जेल में डाल दिया ।

उस षड्यंत्र को खत्म करके सिंहस्कंध ने एक

और निर्णय लिया कि युद्ध में या तो उसकी विजय होगी, या मौत । अब वह अपनी सेना के साथ आगे बढ़ा और सत्यदीप से जा टकराया । दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ, लेकिन सिंहस्कंध की सेना में कुछ ऐसे सैनिक भी थे जो राजा अग्निसिद्ध के प्रति भक्तिभाव रखते थे । उन्होंने स्वयं ही सत्यदीप के सामने समर्पण कर दिया । सिंहस्कंध के लिए यह एक अप्रत्याशित आघात था । उसके जब अनेक योद्धा उसका साथ छोड़ गये, तो सिंहस्कंध को सत्यदीप के हाथों हारते देर न लगी ।

सिंहस्कंध को पराजित करके सत्यदीप ने उसे बंदी बना लिया और राजा अग्निसिद्ध को बंदीगृह से मुक्त कर दिया । अपने को मुक्त पाकर अग्निसिद्ध ने सत्यदीप को अपने गले लगाया और उससे बोला, "मैं तुम्हारी यह सहायता कभी भूल नहीं सकता । मैं तुम्हारा हमेशा ऋणी रहूंगा ।"

राजा अग्निसिद्ध की बात सुनकर सत्यदीप हंस दिया । उसने उत्तर दिया, "इसमें ऋणी होने की कौन सी बात है, महाराज! आप अपने पूर्वनिर्णय के अनुसार अपनी बेटी का हाथ मेरे हाथ में दे दीजिए और मुझे अपने दामाद के रूप में स्वीकार कीजिए!"

बंदीगृह से राजा अग्निसिद्ध सीधे अपने मंदिर में पहुंचा और वहां उसने स्वयंप्रभा को बुलवाकर सत्यदीप से उसके विवाह की बात की ।

स्वयंप्रभा कुछ देर मौन रही । फिर बोली, "अपने मन की बात कहूँ, पिताजी! जब आप बंदी बना लिये गये थे, उस समय अपनी जान

हथेली पर रखकर और प्रजा में राजभक्ति जगाकर रविचंद्र ने विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित की । वह उस समय जन-नायक बनकर अडिग रूप से खड़ा रहा । मैं उसी से विवाह करना चाहती हूँ । लेकिन मुझे यह भी डर है कि यदि सत्यदीप को इस बात का पता चल गया तो वह आपको हानि पहुंचाये बिना नहीं रहेगा ।"

अग्निसिद्ध ने दो-एक पल सोचा और फिर बोला, "बेटी, इस तरह डरने की कोई बात नहीं । तुम्हारा विवाह मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार रविचंद्र से ही करूंगा ।" और इतना कहकर वह सत्यदीप के पास गया और उसे सारी बात बता दी ।

सत्यदीप ने जब स्वयंप्रभा के मन की बात जानी तो जैसा कि स्वयंप्रभा को संदेह था, उसने गुस्सा नहीं किया । इसके विपरीत वह वहीं रुक गया और उसने स्वयं रविचंद्र से स्वयंप्रभा के विवाह की व्यवस्था की । विवाह संपन्न हो गया तो वह अपने राज्य को लौट गया ।

इसके कुछ दिनों के बाद ही राजा अग्निसिद्ध ने वानप्रस्थाश्रम लेने की इच्छा व्यक्त की । उसने अपने पुत्र सिंहस्कंध को सिंहासन पर बैठाया और स्वयं जंगल में आश्रमवासी बनकर रहने लगा । वह अपने जीवन के अंतिम दिन शांति से गुज़ारना चाहता था ।

बैताल की कहानी पूरी हो चुकी थी । वह बोला, "राजन्, सत्यदीप ने अग्निशिखा राज्य पर विजय प्राप्त करके भी उसे अपने कब्ज़े में क्यों नहीं लिया? जिस स्वयंप्रभा से वह विवाह करना चाहता था, उसे किसी और की पत्नी बनाकर वह अपने राज्य को क्यों लौट गया? क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि सत्यदीप राजनीति में दक्ष नहीं था? प्रजा को भड़काकर विद्रोह कराने वाले रविचंद्र के साथ अपनी बेटी स्वयंप्रभा का विवाह कर देना क्या अग्निसिद्ध के लिए न्यायसंगत था? क्या यह उसके राजस पर एक धब्बा नहीं था? जिस पुत्र ने उसे क़ैद में डालकर स्वयं सिहांसन संभाल लिया था, उसी पुत्र को फिर सिंहासन पर बैठाकर स्वयं वानप्रस्थाश्रम वरण कर लेना क्या राजनीति कहलायेगा? इन संदेहों का समाधान मुझे चाहिए । यदि

आप जानते हुए भी सही उत्तर नहीं देंगे तो आपका सर एकाएक फट जायेगा ।"

बैताल के प्रश्न सुनकर राजा विक्रम बोले, "अग्निसिद्ध और सत्यदीप, दोनों ही, राजनीति में बहुत कुशल थे । इसके बारे में तो कोई संदेह होना ही नहीं चाहिए । विशाल और अग्निशिखा के बीच चल रही शत्रुता को खत्म करना सत्यदीप का ध्येय था, और इस ध्येय की पूर्ति का एक ही मार्ग था–राजकुमारी स्वयंप्रभा से उसका विवाह । सिंहस्कंध की पराजय और राजा अग्निसिद्ध की कारागृह से रिहाई–इससे सत्यदीप को अपने ध्येय की सिद्धि प्राप्त हुई । ऐसी अवस्था में किसी दूसरे से प्रेम करने वाली स्वयंप्रभा से यदि वह बलपूर्वक विवाह कर भी लेता, तो यह बर्बरता या पाशविकता ही कहलाता । इसलिए उसने स्वयं वहां रुककर स्वयंप्रभा का विवाह रविचंद्र से करवाया । यही असली राजनीति है । जब कोई साधारण व्यक्ति अपनी सूझ-बूझ और साहस के बल पर ऊपर उठे तो उसे योग्य ही कहा जायेगा । रविचंद्र इसका एक उत्तम उदाहरण था । इससे उसके सामर्थ्य और राजभक्ति का पता चलता है । इसलिए अग्निसिद्ध ने रविचंद्र को अपना दामाद बनाना पसंद किया । इससे उसके राजस पर कोई आंच नहीं आयी । अब सिंहस्कंध की सोचें तो वह मूलतः एक अच्छा व्यक्ति था । वह तो केवल कुछ षड्यंत्रकारियों की बातों में आकर उलटा कदम उठा बैठा था । पर उसे अपनी ग़लती का जल्दी ही एहसास हो गया उसे दोनों तरफ़ से पराजय मिली थी । एक तरफ प्रजा के हाथों और दूसरी तरफ सत्यदीप के हाथों । इसलिए राजा अग्निसिद्ध ने समझ लिया था कि सिंहस्कंध अपने अनुभव के कारण अब सही राह पर आ गया है और इसके हाथों अब प्रजा का बराबर हित ही होगा । इसीलिए उसने उसे सिंहासन पर बैठाया ।"

यह उत्तर देने के कारण राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था । इसलिए बैताल लाश के साथ फौरन अदृश्य हो गया और फिर उसी पुराने पेड़ की शाखा से जा लटकने लगा । (कल्पित)

(आधारः शिवनागेश की रचना)

भुलक्कड़

सीताराम एक नंबर का भुलक्कड़ था । अभी जो काम करता, दूसरे ही क्षण उसके बारे में भूल जाता । कहीं कोई चीज़ रखता तो उसे उसकी याद ही न रहती । इस वजह से सीताराम के परिवार के लोगों को काफी परेशानी उठानी पड़ती । उसकी पत्नी अक्सर उसके साथ-साथ लगी रहती और उसका हर काम स्वयं ही निपटाने की कोशिश करती ।

सीताराम हर रोज़ मंदिर में रामकथा सुनने जाता था । वहां से जब वह लौटता तो कभी उसके चप्पल ग़ायब होते, कभी छाता और कभी कंधे की चादर । फिर घर से किसी-न-किसी को वापस मंदिर जाना पड़ता और वहां छूटी उन चीज़ों को लाना पड़ता ।

पति के इस भूलक्कड़पने से उसकी पत्नी बहुत तंग आ गयी थी । एक दिन उसने उसे खूब फटकारा और खरीखोटी सुनायी ।

पत्नी की उस फ़टकार और खरीखोटी बातों को सुनकर सीताराम के मन को काफी धक्का लगा । वह स्वयं भी अपने भुलक्कड़पन पर बहुत दु:खी था । उसने अब निश्चय किया कि अब वह कहीं कोई चीज़ नहीं भूलेगा ।

अगले दिन जब वह मंदिर से लौटा तो उसने ज़ोर से पुकारकर अपनी पत्नी को जताया, "देखो, तुम बराबर मुझे भुलक्कड़ कहती थी न! आज मैं मंदिर में कुछ भी भूलकर नहीं आया । चप्पल जैसे पहनकर गया था वैसे ही पहनकर लौटा हूं ।"

सीताराम की पत्नी ने हैरान होकर अपने पति के पांव की ओर देखा । अब उसकी हैरानी और बढ़ गयी थी । "वाह! खूब! आपकी याददाश्त के क्या कहने! अपने पैरों की तरफ तो ज़रा देखिए । आप तो चप्पल पहने बिना ही मंदिर गये थे!

जगदीश श्रीवास्तव
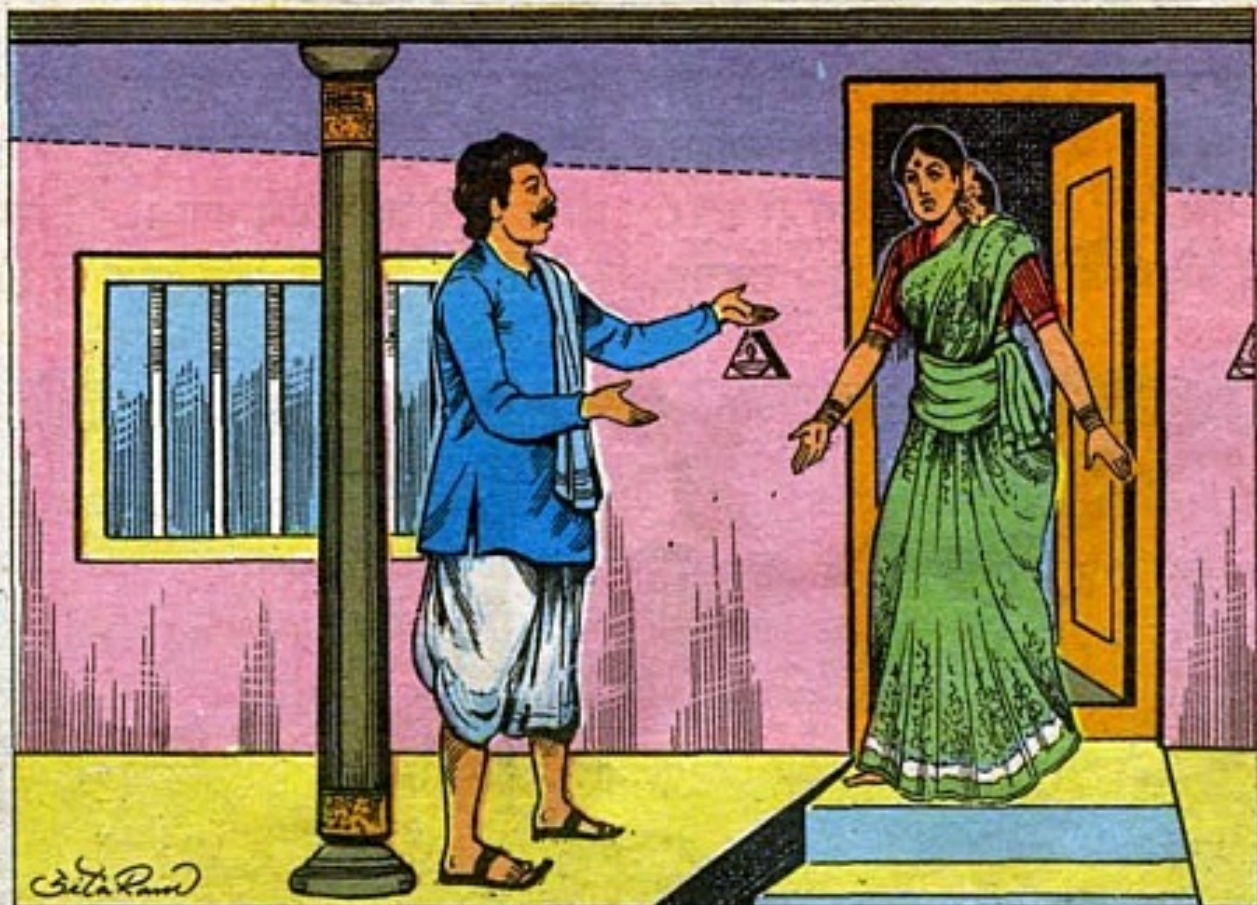
उनके सपनों का भारत

भारत माँ मिट्टी का एक ढेला नहीं है

श्री अरविंद का जन्म १५ अगस्त १८७२ को हुआ था। उन्होंने इंग्लैंड में शिक्षा पायी। १८९३ में वह भारत लौटे और शीघ्र ही वह करवट लेते भारत की आवाज़ बन गये। वह भारत के पहले राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने देश की संपूर्ण स्वतंत्रता की मांग की। एक बार जब उन्हें आभास हो गया कि वह लक्ष्य प्राप्त हो जायेगा, तो वह १९१० में पांडिचेरी चले गये और वहां वह यौगिक क्रियाओं में लीन हो गये। वह चाहते थे कि भारत में एक ऐसी शक्ति का अवतरण हो जो मानवता को विकास की दिशा में और आगे ले जाये। भारत को स्वतंत्रता १९४७ में, उनके जन्मदिवस पर ही, मिली।

उन्होंने एक बार घोषित किया, "भारत माँ मिट्टी का एक ढेला नहीं है। वह शक्ति है, ईश्वर का स्वरूप है।" उन्होंने आगे कहा, "भारत का कभी नाश नहीं हो सकता। मानवजाति के भविष्य के लिए उसे ऊंचे से ऊंचे ले जाना और उसे अपनी नियति के चरम तक पहुंचाना भारत के हिस्से बदा है। उसे ही तमाम दुनिया के लिए भविष्य का धर्म निर्धारित करना होगा। यह एक ऐसा शाश्वत धर्म होगा जिसमें बाकी तमाम धर्म, विज्ञान और दर्शन समा जायेंगे और मानवता आत्मा-स्वरूप में आ जायेगी।"

आओ, हम भविष्य के लिए इस उच्च आदर्श को याद रखें।

क्या तुम जानते हो?

१. उत्तरी भारत में वह कौन सा स्थान है जिसे आम तौर पर 'देवताओं की घाटी' कहा जाता है?

२. ऐसा विश्वास किया जाता है कि जहां आज दिल्ली है, वहां पहले इंद्रप्रस्थ था और वहां पांडव राज करते थे। इस बीच वहां भिन्न-भिन्न नामों से सात बार राजधानी बनी। वे नाम क्या थे?

३. एक पावन संत की अस्थियां भारत में पिछले तीन सौ वर्षों से चांदी और शीशे के बक्से में सुरक्षित रखी हुई हैं। लोग उन्हें १२ वर्षों में केवल एक बार ही देख सकते हैं! उस संत और जगह का नाम बताओ।

४. भारत का 'गुलाबी नगर' कौन सा है? इसका यह नाम क्यों पड़ा?

कृष्ण

विष्णु के सबसे ज़्यादा पूजे जाने वाले अवतार कृष्ण हैं। अपने बचपन के दिनों में वह अपने गांव के ग्वाल-बालों के प्रिय सखा थे। उन्होंने अपने बचपन के दिनों में ही कई ग़ज़ब के पराक्रम किये। उनमें से एक सबसे बड़ा मथुरा के राक्षसी प्रवृत्ति वाले कंस को खत्म करना था। बाद में, जब वह द्वारका के राजा थे, तो कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध छिड़ गया। उन्होंने पांडवों का साथ दिया, क्योंकि वह जीवन के उच्च मूल्यों को वरीयता देते थे। उन्हीं के मार्ग-दर्शन से पांडवों ने विजय प्राप्त की। युद्ध शुरू होने से पहले उन्होंने अर्जुन को बहुत ऊंची आध्यात्मिक शिक्षा दी जिसका गीता के रूप में हमेशा आदर होता आया है।

कुछ लोग तो कृष्ण से उनकी बचपन की क्रीड़ाओं के लिए प्यार करते हैं, लेकिन कुछ अपने को उनका बालसखा मानकर, उनसे सखा-भाव रखते हैं। कुछ और लोग भी हैं जो उन्हें अपना मार्ग-दर्शक मानते हैं। इस तरह अलग-अलग लोग उन्हें अलग-अलग रूपों में देखते हैं, पर मानते उन्हें सब सर्वसंपन्न ईश्वर का रूप ही हैं।

उनका जन्म दिन प्रायः अगस्त के महीने में पड़ता है। लोग यह दिन बड़े उल्लास से मनाते हैं।

चंदामामा की खबरें

पिकासो से सस्नेह

तीस साल पहले जाने-माने चित्रकार पिकासो के एक प्रशंसक ने उन्हें १०० डालर (तब ५०० रुपये) का एक चैक भेजा और साथ में एक रेखाचित्र बनाने के लिए अनुरोध किया। पिकासो ने वह चैक भुनाया नहीं, बल्कि उसके पिछले भाग पर एक हंसते हुए दानव का चित्र बनाया और उस पर अपने हस्ताक्षर करके उसे लौटा दिया। इस वर्ष २४ जून को उस अद्भुत चैक की लंदन में ३,९६० पाउंड (९०,००० रु.) पर नीलामी हुई।

केवल बालिकाएं

चीन में दक्षिण-पूर्वी फुजियां सूबे में गावयांग नाम का एक गांव है। जनसंख्या की दृष्टि से इस गांव को अद्भुत ही कहना होगा। पिछले ४० वर्षों में वहां लगभग १४० बच्चों का जन्म हुआ। उनमें से केवल ९ ही लडके थे; बाकी सब लड़कियां थीं। दरअसल, १९७६ से वहां जितने भी बच्चे हुए हैं, सब लड़कियां ही हैं। क्या यह पर्यावरण के प्रभाव का परिणाम है? वैज्ञानिक अब इस रहस्य को पाने की कोशिश कर रहे हैं।

आओ, साहित्य की दुनिया में विचरण करें

१. मुल्कराज आनंद के एक उपन्यास को इंग्लैंड के लगभग बीस प्रकाशकों ने लौटाया। फिर एक अंग्रेज़ ने उसकी भूमिका लिखी और तब वह स्वीकृत हुआ। वह अंग्रेज़ कौन था? उस उपन्यास का नाम क्या था?
२. हमारी राष्ट्रीय मोहर पर "सत्यमेव जयते" शब्द खुदे हैं। ये शब्द कहां से लिये गये हैं?
३. भारत की वह कौन सी सुविख्यात साहित्यिक कृति है जो नृत्य पर आधारित है? उसका रचयिता कौन था?
४. विख्यात साहित्यिक कृति "तहक़ीक़-ए-हिंद" की रचना किसने की?
५. आधुनिक हिंदी नाटक के अग्रणी भारतेंदु हरिश्चंद्र की दो सबसे अधिक मान्यता प्राप्त कृतियों के नाम बताओ?

उत्तर

क्या तुम जानते हो?

१. कुल्लू में, जहां हर गांव में एक देवता है। साल में एक बार दशहरे के दिनों में इन सब देवताओं को पालकियों में सजाकर शोभा-यात्रा निकाली जाती है।

२. लालकोट, सीरी, तुग़लकाबाद, जहांपनाह, फिरोज़ाबाद, पुराना किला तथा शाहजहानाबाद।

३. सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर, गोआ के बॉम ज़ीसस नाम के बड़े गिरजाघर में।

४. राजस्थान की राजधानी जयपुर। राजा जयसिंह ने इसकी नींव रखी थी और इसे गुलाबी पत्थर के भवनों और द्वारों से सुसज्जित किया था।

साहित्य

१. ई.एम. फोर्स्टर; अनटचेबल़ (अछूत-१९३०)

२. मुण्डक उपनिषद् से। इन शब्दों का अर्थ है—सच्चाई की ही हमेशा जीत होती है।

३. भरत मुनि का 'नाट्यशास्त्र'।

४. अल्बरूनी।

५. "सत्य हरिश्चंद्र" तथा "भारत दुर्दशा"।

संसार की पौराणिक कथाएं – ८

पहला किसान

बात पुरानी है । टार्टारस नामक पाताल लोक पर राजा प्लूटो का शासन था । एक बार प्लूटो ने प्रोस्परपाइन नाम की सुंदर देवी को देखा और उसके प्रति आकर्षित हो गया । फिर उसने जबरन उसे उठाया और अपने त्रिशूल से सियेन नदी को चीर कर उसे अपने राज्य पाताल लोक में ले गया ।

जब प्रोस्परपाइन की माँ देवमाता सिरीस वापस घर आयी तो अपनी बेटी को वहां न पाकर परेशान हो उठी । वह उसे ढूंढ़ते हुए इधर-उधर घूमती रही, पर उसे उसका कहीं कोई सुराग़ न मिला । पहाड़ों, घाटियों और मैदानों में कहीं प्रोस्परपाइन कहीं कोई चिन्ह नहीं था ।

देवमाता सिरीस ने अब एक वृद्धा का रूप धारण किया और दुःख से भरी, एक शिला पर बैठी रही । उसने नौ रातें और नौ दिन वहीं बैठे-बैठे बिता दिये । एक दिन सेल्यूस नाम के एक ग़रीब व्यक्ति और उसकी बेटी की उस पर नज़र पड़ी । उन्होंने सिरीस से विनम्र भाव से कहा, "माँ, तुम यहां क्यों बैठी हो? तुम हमारी झोंपड़ी में चलो ।"

देवमाता सिरीस उस ग़रीब व्यक्ति और उसकी बेटी की विनम्रता से प्रभावित हुई और उनके साथ चल पड़ी । रास्ते में उस ग़रीब व्यक्ति ने सिरीस को बताया कि उसका बेटा एक लंबे अर्से से बीमार पड़ा है और खटिया पकड़े हुए है, और उसके अब बचने की भी कोई उम्मीद नहीं है ।

सिरीस एक साधारण वृद्धा की तरह उसके साथ-साथ चलती रही । जब वह उसके यहां पहुंची तो उसने उस ग़रीब व्यक्ति के खटिया से लगे बेटे के माथे को चूमा । दूसरे ही क्षण उस बालक के चेहरे पर रौनक आ गयी, और वह मुस्कराता हुआ उठ बैठा । यह एक अद्‌भुत चमत्कार था जिसने उस बालक के माँ-बाप और बहन को अचंभे में डाल दिया ।

उस बालक की माँ को अभी एक और चमत्कार देखना था । जैसे ही रात हुई, सिरीस ने उस बालक को सोते-सोते उठाकर बैठा लिया और उस पर कुछ मंत्र फूंकने लगी । बालक की माँ जगी हुई थी । वह चुपचाप यह सब देख रही थी ।

सिरीस ने उस बालक को अब राख के एक ढेर पर लिटा दिया । बालक की माँ पहले तो सब कुछ चुपचाप देख रही थी, लेकिन अब उससे सहन नहीं हुआ । वह समझ नहीं पा रही थी कि वह बुढ़िया उसके बेटे के साथ क्या करना चाहती है । वह डर गयी और डर से चीखने लगी । फिर वह दौड़कर राख के ढेर की ओर लपकी और वहां से उसने अपने बेटे को खींच लिया ।

सिरीस ने बालक की माँ का ढाढ़स बंधाया और उसे समझाती हुई बोली, "तुमने बहुत सब्र दिखाया, लेकिन अगर तुम थोड़ा-सा सब्र और दिखाती तो तुम्हारा बेटा अमर हो जाता । तुमने मेरी सारी मेहनत बरबाद कर दी । चलो, जो हुआ सो हुआ, अब एक बात याद रखना- तुम्हारा बेटा बड़ा होकर बड़ा साहसी बनेगा और खूब प्रतिष्ठा कमायेगा । वह जनता की खूब भलाई भी करेगा ।"

इतना कहकर देवमाता सिरीस वहां से चली गयी । कुछ ही समय बाद उसे पता चला कि उसकी बेटी प्रोस्परपाइन के साथ प्लूटो ने शादी कर ली है और अब वह टार्टारस की रानी बन गयी है । अब हालात के साथ समझौता करने के अलावा चारा भी क्या था! वह शांत होकर बैठ गयी ।

कुछ वर्ष और बीत गये । देवमाता सिरीस उस ग़रीब व्यक्ति के परिवार को भूली नहीं थी । बालक ट्रिप्टोलिमस वक्त के साथ बड़ा होकर युवा हो गया था । एक बार फिर सिरीस उस ग़रीब के घर पहुंची और उसने युवा हो गये ट्रिप्टोलिमस को हल का इस्तेमाल करना सिखाया । इसके साथ ही उसे बीज बोना और खेती करना भी सिखाया । इस तरह उसने उसे संसार का पहला किसान बना दिया ।

अब जब ट्रिप्टोलिमस ने खेती का काम सीख लिया तो सिरीस ने उसे पंखों वाले ड्रेगनों द्वारा खींचे जाने वाले अपने रथ पर बैठाया और उसे उड़ाती हुई संसार के कई देशों में ले गयी । वह चाहती थी कि ट्रिप्टोलिमस और लोगों को भी खेती का काम सिखाये । ट्रिप्टोलिमस ने ऐसा ही किया । उसने अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा से निभाया ।
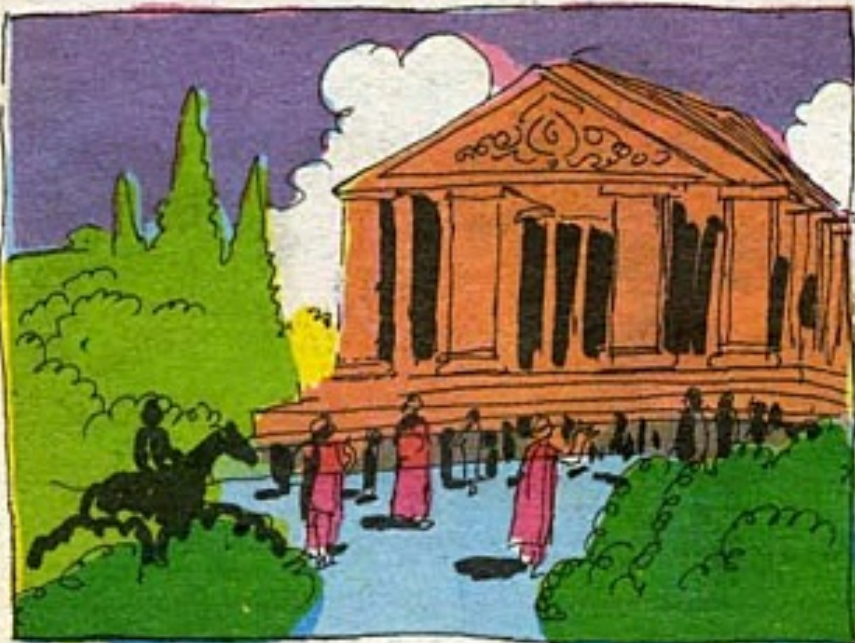
ट्रिप्टोलिमस ने अपने गांव में देवमाता सिरीस की प्रतिष्ठा में एक भव्य मंदिर बनवाया । वक्त गुज़रने के साथ-साथ इस मंदिर में खूब पूजा-अर्चना होने लगी । होते-होते इस पूजा-अर्चना ने एक उत्सव का रूप ले लिया, जिसे यूनान के लोग बड़ी धूमधाम से काफी समय तक मनाते रहे ।

ढोंगी योगी

काफी समय पहले भद्राचल के एक जंगल में एक योगी का आश्रम था। यह आश्रम जंगल में से गुज़रने वाले मार्ग पर स्थित था। आश्रम में योगी हमेशा तप में लीन दिखता। वह काफी स्वस्थ था, खूब हृष्ट-पुष्ट। उसकी दाढ़ी काली और लंबी थी। उसके चेहरे पर अद्‌भुत चमक थी। देखनेवाला उसकी वंदना में हाथ उठाये बिना नहीं रह सकता था।

वह योगी उस जंगल में कब आया, कैसे आया, कहां से आया—यह सब किसी को पता नहीं था। उसका आश्रम वहां कैसे बना, कब बना-इस सब के बारे में भी किसी को कोई जानकारी न थी। लोग इन सब बातों को लेकर तरह-तरह की अटकलें लगाते। लेकिन चाहे वे कुछ भी अटकलें लगाते, एक बात पर सब एकमत थे कि वह लोकोद्धार के लिए ही आया है और उसके हाथों सब का कल्याण ही होगा। इसलिए वहां अब काफी भीड़ जमा रहने लगी थी और हर कोई उसकी आशिष के लिए उतावला दिखता था। लोग उसको दान भी देने लगे।

लेकिन वह योगी किसी से बात नहीं करता था। वह हमेशा मौन धारण किये रहता। आश्रम में उसने एक ऊंचा मंडप बना रखा था। उसी पर वह पद्‌मासन लगाये ध्यान में लीन बैठा रहता। देखने वालों को ऐसा लगता जैसे इस दुनिया से उसका कोई रिश्ता-नाता नहीं है। इसलिए वे वहां आते और आराधना-अर्चना के लिए जो भी अपने साथ लाते, उसे वहीं योगी के चरणों में रखकर और उसे प्रणाम करके चले जाते।

वैसे तो वह जंगल डाकू-लुटेरों से भरा हुआ था, पर योगी का आश्रम वहां होने से अब काफी चहलपहल रहने लगी थी। आने-जाने वालों का तांता लगा ही रहता। पर लूट-मार

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

की घटनाएं घटने के बजाये दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही थीं ।

एक रात काफी देर गये जंगल के उस रास्ते से एक गाड़ी जा रही थी । उस गाड़ी में तीन स्त्रियां, दो पुरुष और एक बच्चा बैठे थे । स्त्रियों के बदन गहनों से लदे हुए थे । अचानक एक डाकू उस गाड़ी के सामने आ खड़ा हुआ और उसने गाड़ी रोक ली । उसने अपने सर को किसी बड़े कपड़े से बांध रखा था । उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और लाल थीं । उसकी मूंछें भी लम्बी थीं और उसके हाथ में एक मज़बूत लाठी थी । उसकी वेशभूषा देखकर गाड़ी में बैठे सभी लोग डर गये । उनके दिल की धड़कन तेज़ हो उठी । वे थर-थर काँपने लगे । उनके मुंह से एक बात भी नहीं निकल पा रही थी ।

डाकू ने अपनी लाठी टक-टक ज़मीन पर बजायी और बड़ी रोबदार आवाज़ में बोला, "देखो, मैं डाकुओं का सरदार ज़रूर हूँ, पर मैं किसी को नाहक सताने और उसकी जान लेने में यकीन नहीं करता । मुझे तुम लोगों का केवल धन चाहिए, और वह तुम अपने आप, बिना झमेला मचाये, मेरे हवाले कर दो । धन मुझे प्राप्त हो गया तो तुम्हारी जान को कोई खतरा नहीं । धन प्राप्त नहीं हुआ तो झाड़ी के पीछे छिपे मेरे आदमी अभी आनन-फानन तुम सब का सफाया कर देंगे । बस, मेरे इशारा करने की देर है । वे बड़े क्रूर हैं । किसी की जान लेते उन्हें एक पल भी नहीं लगता । अब तुम तुरंत फैसला करो । यह फैसला तुम्हारे हाथ में है ।"

गाड़ी में बैठे व्यक्तियों ने डरते डरते झाड़ी की तरफ देखा । वहां वाकई बड़े-बड़े पगगड़ वाले सर उन्हें दिखाई दिये । उन्हें लगा वैसे उनकी जान अभी गयी कि गयी । पुरुष लाचार थे । वे टुकुर-टुकुर देखे जा रहे थे । स्त्रियों ने फौरन अपने गहने उतारने शुरू कर दिये और फिर उन्हें उन्होंने उस डाकू के सामने रख दिया । डाकू ने फुर्ती से उन गहनों को समेटा और गाड़ी में सवार लोगों से बोला "ठीक है, अब तुम जा सकते हो ।" और इतना कहकर उसने उस गाड़ी को आगे बढ़ने को कहा और खुद उस लूट के माल के साथ वहां से ग़ायब हो गया ।

इस घटना के कुछ ही देर बाद उस रास्ते से

एक व्यापारी गुज़रा । व्यापारी पैदल था । डाकू ने उसे भी रोका और अपनी लाठी के साथ उसके सामने डटकर खड़ा हो गया । फिर उसने पहले वाले शब्द दुहराये, "चुपके से अपना माल मेरे हवाले कर दो, नहीं तो मरने के लिए तैयार हो जाओ ।"

व्यापारी बुद्धिमान था और साहसी भी । वह डाकू से बोला, "मेरे पास धन बहुत कम है, और जो है वह मेरा नहीं है ।"

पर डाकू ने उसकी बात पर कान नहीं धरा और अपनी बात फिर दुहरायी । इस पर व्यापारी ने अपना धन उसके हाथ पर रखते हुए ज़ोर से कहा, "झाड़ियों के पीछे बैठे आप लोग सुन रहे हैं? मैंने आपके सरदार को एक हज़ार मुहरें दी हैं । अपना हिस्सा ठीक से ले लेना । फिर न कहना मैंने बताया नहीं ।"

पर जैसे ही व्यापारी ने इतनी बात कही, वैसे ही डाकू ने उस पर अपनी लाठी से एक-दो वार कर दिये । इस पर भी व्यापारी ने अपनी हिम्मत नहीं छोड़ी, और वह वहां से चीखता-चिल्लाता भाग खड़ा हुआ और भागते-भागते एक सराय में जा पहुंचा ।

उस समय सराय में कुछ सिपाही और एक दंडनायक ठहरा हुआ था । व्यापारी ने जैसे ही उन्हें देखा, अपनी व्यथा-कथा कह सुनायी । उसकी व्यथा-कथा सुनकर दंडनायक बोला, "कहां है वह डाकू? चलो, दिखाओ हमें! हम उसे अभी दुरुस्त किये देते हैं ।"

व्यापारी, दंडनायक और सिपाहियों के साथ जंगल की ओर चल पड़ा । जब वे डाकू के मुकाम पर पहुंचने को हुए तो सिपाही कहीं छिप गये । अब व्यापारी आगे-आगे चल रहा था और दंडनायक ठीक उसके पीछे-पीछे ।
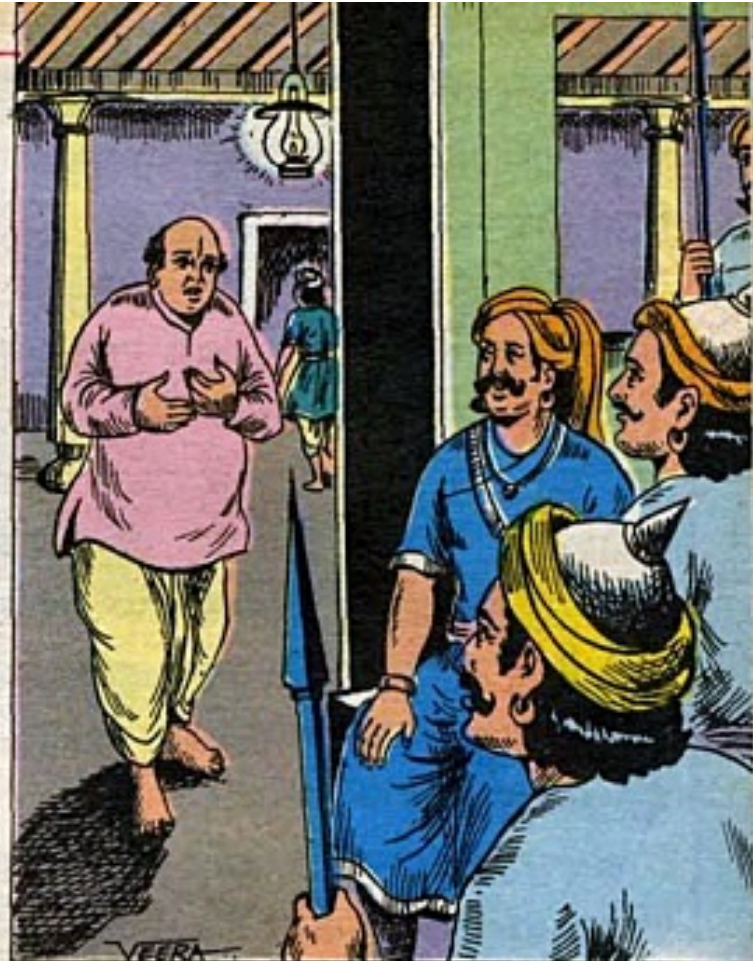
जब डाकू ने देखा कि केवल दो ही व्यक्ति आ रहे हैं तो उसने फिर उन्हें रोका । "निकालो जो कुछ है तुम्हारे पास! नहीं तो अपनी जान से हाथ धो बैठोगे । मेरे आदमी मेरे इशारे का ही इंतज़ार कर रहे हैं!"

दंडनायक तलवार चलाना और लाठी चलाना अच्छी तरह जानता था । वह वैसे भी बहुत साहसी था । उसने सिपाहियों के लिए सीटी बजाई और खुद उस डाकू पर टूट पड़ा । फिर देखते ही देखते उसने उस डाकू को एक पटकनी दी और उसे नीचे गिरा दिया । अब तक वहां सिपाही भी आ पहुंचे थे । उसने

उन्हें आदेश दिया कि वे फौरन झाड़ियों के पीछे छिपे बैठे डाकू के साथियों को अपनी हिरासत में ले लें।

सिपाही तुरंत झाड़ियों की ओर बढ़े। लेकिन वहां तो बिलकुल, कोई हरकत न थी। न वहां से कोई भागने की कोशिश कर रहा था, और न ही वहां से उनके साथ मुकाबला करने कोई आगे बढ़ा था। अब सिपाहियों ने पग्गड़-बंधे उन सरों पर अपनी लाठियों से दनादन प्रहार करना शुरू कर दिया। इस पर भी वहां कोई हरकत नहीं हुई, बल्कि वे सर जहां थे, वहीं रहे।

अब बात स्पष्ट हो गयी थी कि वे पग्गड़-बंधे सर डाकू के साथी नहीं थे, बल्कि घास के पुतले थे। उन्हें देखकर डाकू की बुद्धि पर सब को हैरानी हुई।

योगी का आश्रम पास ही था। इसलिए सब ने रात वहीं काटने की सोची। पर जब वे आश्रम में पहुँचे, तो उन्हें वहां कोई दिखाई नहीं दिया। योगी का कहीं कोई पता न था।

दंडनायक का आदेश पाकर समूचा आश्रम छान मारा गया। वहां लूट का काफी सामान था। धन और ज़ेवर भी काफी थे। वे सब सिपाहियों ने अपने कब्ज़े में कर लिये। फिर उन्हें एक जगह वह लंबी, काली दाढ़ी भी टंगी मिली। सब की निगाह उसी पर टिक गयी। सब हैरत से भर गये।

इतने में वह डाकू स्वयं ही बोला, "इतना हैरान क्यों हो रहे हो? वह मेरा दिन का वेश है। दिन में जब मैं मौन धारण किये रहता हूं तो लोग वैसे ही मुझे काफी भेंट चढ़ा जाते हैं, और जब रात होती है तो मैं खुद बाहर निकल पड़ता हूं, और जिससे जो मिले, हथिया लेता हूं। पर अब तो यह तमाम खेल खत्म हुआ।.... यह चल भी कितने दिन सकता था? एक-न-एक दिन तो इस राज़ को खुलना ही था!" और यह कहकर उस योगी-रूपी डाकू ने ज़ोर से अट्टहास किया।

दंडनायक ने जब उस ढोंगी योगी को राजा के सामने पेश किया तो राजा ने उसे बहुत धिक्कारा और फिर उसे आजीवन कारावास की सज़ा सुना दी।

राक्षसियों से हनुमान के बारे में खबर पाकर रावण को ग़ुस्सा आ गया। उसने अपने बलिष्ठ राक्षसों को बुलवाया और उन्हें आदेश दिया कि वे फौरन हनुमान को पकड़ लायें। रावण से आदेश पाकर उन बलिष्ठ राक्षसों ने अपने को अस्त्रों से लैस किया और वे हनुमान को पकड़ने निकल पड़े।

हनुमान अशोक वाटिका के द्वार पर डटा खड़ा था। राक्षसों ने उसे दूर से ही देख लिया था। फिर आंख झपकते ही उन्होंने उसे घेर लिया। उस समय हनुमान अपने बृहत् आकार में था। उसने पहले ज़ोर से अपनी पूंछ ज़मीन पर फटकारी। फिर जैसे कि किसी को चुनौती देते हुए उसने अपनी भुजाओं को अपनी हथेलियों से थपथपाया और साथ ही वह ज़ोर से चिंघाड़ा। उसकी चिंघाड़ समूची लंका में फैल गयी। सभी लंकावासी सतर्क हो गये।

हनुमान ने अब अपनी आंखें लाल कर लीं और उसके साथ ही उसने जय-जयकार करते हुए कहना शुरू किया, "राम-लक्ष्मण की जय हो! सुग्रीव की जय हो! मैं राम का दास, पवन-पुत्र हनुमान हूँ। मैं राक्षसों के देखते-ही-देखते पूरी लंका को ध्वस्त कर दूंगा, और सीता को नमस्कार करके यहाँ से चल दूंगा।"

हनुमान की ऐसी हुंकार सुनकर राक्षस भयभीत हो गये। लेकिन उन्हें रावण के आदेश का तो पालन करना ही था। इसलिए उन्होंने हनुमान पर अपने अस्त्रों का प्रयोग करना शुरू कर दिया। अशोक वाटिका के द्वार के समीप ही हनुमान को एक लौह-गदा

मिल गया । हनुमान ने उसी को उठा लिया और उसी से तमाम राक्षसों का सफाया करने लगा । अब वह वाटिका के द्वार पर फिर पहले की तरह खड़ा था ।

कुछ राक्षस वहां से भाग खड़े हुए थे । उन्होंने रावण को अपने साथियों की मौत की खबर दी । यह सुनते ही रावण का क्रोध और भड़क उठा । उसने अब प्रहस्त के पुत्र, जंबूमाली को बुलवाया । जंबूमाली एक बहुत बड़ा योद्धा था । अब उसी को आदेश मिला कि वह हनुमान को अपने काबू में लाये ।

इस बीच हनुमान की नज़र चैत्यप्रासाद पर पड़ी । उसने तुरंत फैसला किया कि पहले वह इसे ही ध्वस्त करेगा । दूसरे ही क्षण वह उस पर कूद पड़ा और उसे ध्वस्त करके वह फिर चिंघाड़ा । अब तक चैत्यप्रासाद के रक्षक भी वहां अस्त्र लेकर पहुंच चुके थे । उन्होंने हनुमान को ललकारा । हनुमान ने एक खंभा उखाड़ा और उसे ज़ोर से हवा में घुमाकर कोई एक सौ राक्षसों को मार गिराया ।

उसी समय जंबूमाली भी वहाँ पहुंच गया । वह अपने रथ पर सवार था और धनुषबाण लिये हुए था । हनुमान ने जैसे ही देखा कि जंबूमाली उससे युद्ध करने के लिए आया है, उसने तुरंत उसे ललकारा ।

हनुमान उस समय चैत्यप्रासाद के एक ऊपरी खंभे पर बैठा हुआ था । जंबूमाली ने उस पर वहीं बाण छोड़े । हनुमान इससे लहूलुहान हो गया । वह इस प्रहार से भड़क उठा । उसकी बगल में एक बड़ा-सा पत्थर पड़ा था । उसने उसे ही उठाकर जंबूमाली की ओर फेंका । जंबूमाली ने उस पत्थर को अपने बाणों से निरस्त कर दिया । ऐसे ही उसने हनुमान द्वारा फेंके गये सालवृक्ष को भी अपने बाणों से निरस्त कर दिया । कुछ बाण हनुमान को भी लगे । इससे हनुमान बुरी तरह घायल हो गया । अब उसका गुस्सा और बढ़ गया था । उसने अपना लौह-गदा उठाया और उसे ज़ोर से घुमाकर जंबूमाली पर फेंका । जंबूमाली इस वार की ताब न ला सका । इस एक ही वार ने उसके रथ और घोड़ों को चकनाचूर कर दिया । साथ ही जंबूमाली का भी कहीं कोई निशान न रहा ।

जब रावण ने सुना कि जंबूमाली भी इस

दुनिया में नहीं है तो उसकी कनपटियाँ बज उठीं। उसने अब अपने सातों मंत्रीपुत्रों को बुलवाया और उन्हें हनुमान को बंदी बनाकर लाने का आदेश दिया। साथ में उनके सेना भी भेजी। उन मंत्री-पुत्रों में से अब हर कोई हनुमान को स्वयं ही बंदी बनाना चाह रहा था। वे रथों पर सवार हुए और हनुमान को धूल चटवाने के उद्देश्य से आगे बढ़े।

हनुमान अब फिर वहीं अशोक वाटिका के द्वार पर खड़ा था। उन्होंने उस पर निशाना साधा और बाणों की वर्षा शुरू कर दी। उधर हनुमान ने बाणों को बेकार करने के लिए आकाश में इधर से उधर, और उधर से इधर, उड़ना शुरू कर दिया। साथ-साथ उसका सिंहनाद भी जारी रहा। कई राक्षस इस सिंहनाद से भयभीत हो उठे थे। हनुमान को जैसे ही मौका मिलता वह उन्हें एक ही वार में धराशायी कर देता। इस तरह कई राक्षस इस लोक को छोड़ गये थे। जो बाकी बचे थे, वे भी अब आर्तनाद करते हुए वहाँ से भाग रहे थे।

हनुमान अब फिर अशोक वाटिका के द्वार के पास खड़ा था। वह अब और युद्ध करना चाहता था। उसके अंग-प्रत्यंग जैसे कि युद्ध के लिए फड़क रहे थे।

जब रावण को पता चला कि मंत्री-पुत्र भी हनुमान के हाथों परलोक पहुंचा दिये गये हैं, तो उसके मन में भी अब थोड़ा-सा भय पैदा हुआ। फिर भी उसने इसे प्रकट नहीं होने दिया और अपने सेना-नायकों में से विरूपाक्ष, यूपाक्ष, दुर्धर, प्रघस और भावकर्ण को बुलवा भेजा। फिर उन्हें आदेश दिया, "तुम सब

अभी रथों और हाथियों पर सवार होकर जाओ और उस वानर की उद्दण्डता को समाप्त करो । इस मामले में ज़रा भी ढील नहीं होनी चाहिए । मुझे संदेह है कि वह वानर नहीं है! वह ज़रूर कोई शक्तिशाली भूत-प्रेत है । हो सकता है इंद्र ने तप करके इस भूत का सृजन किया हो और इससे हमें मरवाना चाहता हो। बालि, सुग्रीव, जांबवंत, नील, द्विविद जैसे वानरों को मैं जानता हूँ। उनमें से कोई भी इतना शक्तिशाली नहीं है । तुम अपनी पूरी ताकत लगाकर इस वानर को किसी तरह अपने वश में करो और उसे बंदी बना लो । तुम्हें अपनी सुरक्षा का पूरा-पूरा ख्याल रखना होगा ।" इस तरह रावण ने उन्हें सतर्क करते हुए विदा किया ।

राजाज्ञा पाकर पांचों सेनानायक अपनी पूरी सेना के साथ हनुमान को परास्त करने निकल पड़े । उन्होंने वहाँ पहुंचते ही उसे पूरी तरह से घेर लिया और उस पर तरह-तरह के अस्त्रों से वार करना शुरू किया । उन्होंने उस पर एक ही साथ कई अस्त्र चलाये । कुछ अस्त्र हनुमान के सर से आ टकराये । हनुमान ने फिर सिंहनाद किया और आकाश में पक्षी की तरह उड़ गया । इस पर भी दुर्धर ने अपने बाणों से उसका आकाश में पीछा किया । लेकिन हनुमान उसके बाणों से बराबर बचता रहा । अब उसने अपने शरीर को एक बार फिर बढ़ाना शुरू किया और बिजली की तरह दुर्धर के रथ की तरफ लपका । इससे दुर्धर की तो चिंदी-चिंदी उड़ ही गयी, उसका रथ और उसमें जुते आठों घोड़े भी अपना अस्तित्व खो बैठे ।

इसके बाद हनुमान ने एक सालवृक्ष उखाड़ा और उससे विरूपाक्ष और यूपाक्ष को मौत के घाट उतार दिया । अब हनुमान का युद्ध प्रघस और भावकर्ण के साथ हो रहा था । उसने एक छोटी सी पहाड़ी उखाड़ी और उससे उन दोनों सेनानायकों का सफाया कर दिया ।

हनुमान अब फिर अशोक वाटिका के द्वार पर पहले की तरह खड़ा था ।

रावण को जब खबर मिली कि हनुमान ने उन पांचों सेनानायकों को भी मौत के घाट उतार दिया है तो उसकी परेशानी गहरी हो

गयी और उसने उसी परेशानी में अपने पुत्र अक्षयकुमार की तरफ देखा। अक्षयकुमार युद्ध में विशेष रुचि रखता था। इसलिए उसके पिता का उसकी तरफ देखना भर ही उसके लिए काफी था। वह फौरन उठा और एक स्वर्णरथ पर सवार होकर हनुमान से टकराने अशोक वाटिका की ओर बढ़ चला। उसके रथ में जुते घोड़े जैसे ही चलना शुरू करते, वैसे ही वे हवा में उठ जाते। रथ में अनेक अस्त्र भी हमेशा पड़े रहते।

हनुमान पर जैसे ही अक्षयकुमार की दृष्टि पड़ी, वैसे ही वह समझ गया कि यह कोई साधारण योद्धा नहीं है। इस लिए वह बड़े पैमाने पर युद्ध के लिए तैयार हो गया। दोनों के बीच जमकर युद्ध हुआ। अक्षयकुमार के तरह-तरह के अस्त्रों के प्रहार से हनुमान का उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। अब हनुमान आकाश में उड़ा। तब अक्षयकुमार भी अपने रथ के साथ आकाश में उड़ा और हनुमान पर बाण पर बाण छोड़ने लगा। हनुमान उनसे बचने के लिए आकाश में घूमने लगा। वह साथ-साथ यह भी सोच रहा था कि अक्षयकुमार का अंत कैसे हो। यदि वह इतनी कम उम्र में इतना पराक्रमी है, तो बड़ा होकर तो वह बहुत बड़ी परेशानी का कारण बन जायेगा। बस, यह विचार उसके मन में आया ही था कि उसने फुर्ती से अक्षयकुमार को उसके पांवों से पकड़ लिया और उसे हवा में घुमाते हुए ज़ोर से ज़मीन पर दे मारा। अक्षयकुमार का ज़मीन से टकराना था कि उसने अपने प्राण छोड़ दिये।

अक्षयकुमार की मौत की खबर पाकर रावण दुःखी होकर एकदम बौखला उठा। पर वह अपने दुःख को किसी तरह दबाये रहा और अपने दूसरे पुत्र इंद्रजित् की ओर देखते हुए बोला, "इस वानर ने अब तक जंबूमाली, मंत्री-पुत्रों, पांच सेनानायकों, बहुत बड़ी तादाद में सेना और तुम्हारे छोटे भाई अक्षय को मौत के घाट उतार दिया है। इसलिए तुम अब स्वयं जाओ और उसके बल का ठीक अनुमान लगाकर उससे युद्ध करो। तुम युद्धकला में मेरे समान ही दक्ष हो। तुम देवताओं को भी युद्ध के मैदान में ललकार सकते हो। तुम अपने साथ सेना नहीं ले जाओगे, केवल अपने अस्त्रों पर ही भरोसा

करोगे । मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम अपनी रक्षा स्वयं कर सकते हो । इसलिए मैं तुम्हें उस वानर से युद्ध करने भेज रहा हूँ ।"

इंद्रजित् पिता का आदेश पाकर उठ खड़ा हुआ । उसने अपने पिता की परिक्रमा की और युद्ध के लिए चल पड़ा । हनुमान ने रथ पर सवार इंद्रजित् को जैसे ही अपनी ओर बढ़ते देखा, उसे बड़ा संतोष हुआ । साथ ही उसका उत्साह और बढ़ गया और उसने उसी उत्साह में सिंहनाद किया ।

जैसे ही इंद्रजित् ने हनुमान् पर बाण छोड़ा, वैसे ही हनुमान आकाश में उड़ा । फिर वह इंद्रजित् के बाणों से बचने के लए बड़ी स्फूर्ति से आकाश में कलाबाज़ियाँ लगाते हुए विचरने लगा । जब इंद्रजित् ने देखा कि उसका एक भी बाण हनुमान तक नहीं पहुंच पा रहा है, तो वह एकदम चिढ़ गया । अब उसे अनुमान हो गया था कि हनुमान को मार पाना संभव नहीं । इसलिए उसने सोचा कि चलो कम-से-कम इसे बंदी तो बनाया जाये, और इसी विचार से उसने उस पर ब्रह्मास्त्र छोड़ा । ब्रह्मास्त्र के वार से हनुमान एकदम बंध गया और आकाश से नीचे ज़मीन पर आ गिरा ।

अब हनुमान लाचार था और निष्क्रिय भी । उसने जान लिया था कि ब्रह्मास्त्र ने उसे अपने पाश में कस लिया है । फिर उसे याद आया कि किसी भी अस्त्र से न बंधने का उसे ब्रह्मा से वरदान मिला है । फिर भी उसने यह तय किया कि कुछ देर तक वह उस ब्रह्मास्त्र से बंधा रहेगा । उसे विश्वास था कि ज़रूरत पड़ने पर उसे ब्रह्मा, इंद्र तथा पवन बचाने आयेंगे । दूसरे, उसने यह भी सोचा कि इस तरह बंदी बने रहकर उसे रावण से बात करने का अवसर मिल जायेगा ।

इसलिए हनुमान निष्क्रिय ही पड़ा रहा । अब कुछ राक्षस उसके समीप आये और उन्होंने उसे रस्सियों से जकड़ना शुरू कर दिया । लेकिन जैसे ही उसे रस्सियों से जकड़ा जाने लगा, वैसे ही ब्रह्मास्त्र ने उसे मुक्त कर दिया, क्योंकि जहाँ दूसरे बंधन रहें, वहां ब्रह्मास्त्र नहीं टिकता । इंद्रजित् यह बात भली भांति जानता था । इसलिए राक्षसों के व्यवहार पर उसे बड़ी परेशानी हुई । यह

मूर्खतापूर्ण कार्य नहीं तो और क्या था! उधर जब राक्षस हनुमान को बंदी बनाकर रावण के सामने पेश करने के लिए ले जा रहे थे, उसे तब तक पता नहीं चला था कि उसे ब्रह्मास्त्र ने मुक्त कर दिया है ।

राक्षस बड़े खुश थे । वे उसे हर तरह से यातना पहुंचाने की कोशिश कर रहे थे और विजयोत्साह में तरह-तरह की आवाज़ें भी निकाल रहे थे ।

जब हनुमान को रावण के सामने पेश किया गया तो इंद्रजित् ने दरबार में उपस्थित सभी विशिष्ट जनों को संबोधित करते हुए कहा, "यह रहा वह उद्दंड वानर!"

हनुमान एक मस्त हाथी की तरह दिख रहा था । उसे देखकर रावण के सभी दरबारी एक दूसरे से प्रश्न करने लगे, "भला यह कौन हो सकता है? यह यहां क्यों आया होगा? यहाँ इसका किससे संबंध होगा?"

रावण के दरबार में हनुमान ने जैसे ही कदम रखा था, वैसे ही उसने चारों ओर अपनी नज़र दौड़ायी थी । फिर उसकी नज़र रावण पर टिक गयी थी । रावण की आंखें क्रोध से लाल अंगार बनी हुई थीं । उसने अपने मंत्रियों की ओर देखा, जैसे कि वह उनसे कहना चाह रहा हो कि वे हनुमान से पूछताछ करना शुरू करें ।

रावण के मंत्री ने हनुमान से इस प्रकार प्रश्न किये :

"कौन हो तुम, और यहाँ तुम क्यों आये हो? तुम्हें यहाँ किसने भेजा है?"

हनुमान का उत्तर भी उतना ही संक्षिप्त था, "मैं वानर-राजा सुग्रीव का दूत हूँ । उनके भेजने पर ही मैं यहाँ आया हूँ ।"

तब रावण ने प्रहस्त को आदेश दिया, "पूछो इससे कि यह यहां क्यों आया है । अशोक वाटिका को इसने क्यों ध्वस्त किया? राक्षसियों को इसने क्यों भयभीत किया? हमारे सैनिकों से युद्ध करके इसने इतने वीरों का क्यों वध किया?"

देवाता सर्प

कमलपुर गांव में पार्वतीबाई नाम की एक धनी महिला रहती थी । उसके चार बेटे थे । पति के देहांत के बाद से ही वह अपने बेटों के लिए मां और बाप, दोनों, बन गयी । जब बेटे बड़े हो गये तो उनके लिए उसने पास के शहर में कपड़े की एक दुकान खोल दी । फिर उनके लिए बहुएं ढूंढ़ी गयीं और उनकी शादी कर दी गयी ।

पार्वतीबाई एक भली महिला थी, किंतु थी वह कंजूस । घर में लाखों रुपये होने के बावजूद वह छोटा-सा खर्च करने में आनाकानी करती और कई बार खर्च के नाम पर बहुत परेशान हो उठती । पराये घर से आयी बहुएँ मन-ही-मन कुढ़ती रहतीं ।

आखिर उन्होंने सोचा – चलो ठीक है, जब कभी सास गांव से बाहर जायेगी, तब हम अपने मन-भाते पकवान बनाकर खाती रहेंगी । लेकिन पार्वतीबाई गांव से बाहर जाने का नाम ही न लेती थी ।

एक बार पार्वतीबाई को उसके छोटे भाई के यहां से बुलावा आया । वह पास ही के एक गांव में रहता था । पार्वतीबाई ने तय किया कि वह अगले दिन ही अपने भाई के यहां चली जायेगी । बहुओं को जैसे ही इसकी खबर मिली, वैसे ही उनके चेहरे गुलाब की तरह खिल उठे । वे आपस में आंखों ही आंखों में बातें करती, और सास जब थोड़ा सा भी परे हटती, तो फुसफुसाने लगतीं ।

पार्वतीबाई समझदार तो थी ही । उसे अपनी बहुओं का मन आंकते देर नहीं लगी । लेकिन ज़ाहिरा तौर पर वह चुप रही । उसने दिखावा यही किया कि वह इस सब के बारे में कुछ नहीं जानती ।

उस रात जब वह सोने को थी तो चारों बहुएं पिछवाड़े में तुलसीचौरे पर इकट्ठी हो गयीं और आपस में खूब घुलमिलकर बातें

वास्तव में चारों बहुएं तो इसी क्षण की प्रतीक्षा में थीं । जैसे ही उन्हें विश्वास हो गया कि उनकी सास चली गयी है, वैसे ही उन्होंने अपने-अपने पकवान बनाने की तैयारी शुरू कर दी ।

सब खुश थे । पर अब चारों भाइयों को एक परेशानी भी सताने लगी थी कि अगर माँ तक यह बात पहुंच गयी तो क्या होगा! चारों बहुओं ने अपने-अपने पति को समझाया कि अगर वे यह बात अपने तक रखेंगे तो माँ तक पहुंचने का सवाल ही नहीं उठता ।

जब पति और उनकी पत्नियां आश्वस्त हो गये तो चारों भाई अपने काम पर शहर के लिए रवाना हो गये । पति जब चले गये तब पत्नियों की खाने की बारी आयी । अब तो उन्होंने अगली-पिछली सब कसर निकाल दी । अभी वे खा ही रही थीं कि दरवाज़े पर किसी के खट-खटाने की आवाज़ हुई । बड़ी बहू ने दरवाज़ा खोला । पर दरवाज़ा खोलते ही जैसे कि वह पछाड़ खाकर गिरने को हुई । उसके सामने उसकी सास खड़ी थी और वह मंद-मंद मुस्करा रही थी ।

सास के हाथ में एक टोकरी थी । वैसे वह बहुत थकी हुई दिख रही थी, और हांफ भी रही थी ।, "उफ्! कितनी गर्मी है! कितनी लू है!" वह बोली, "बीच में ही मुझे सफर छोड़ना पड़ा और वापस आना पड़ा ।" इतना कहकर वह घर के भीतर चली गयी ।

घर के भीतर दाखिल होती सास को

करने लगीं । फिर उन्होंने फैसला किया कि जब सास घर में नहीं होगी तो वे बढ़िया से बढ़िया पकवान बनायेंगी और जमकर खायेंगी ।

बड़ी बहू का कहना था कि उसका मन घी में तले बड़े खाने को हो रहा है । दूसरी बहू बोली कि वह काजू की मिठाई खाना चाहती है । तीसरी बहू का खोये की गुजिया पर मन हो रहा था । चौथी को हलुआपूरी बेहद पसंद थी । सबके मुँह में पानी आ रहा था और उनकी जीभ चुबला रही थी ।

इस तरह अपने-अपने मन की बात कहकर वे बहुएं अपने-अपने कमरों में चली गयीं । सास ने तो केवल नींद का ढोंग किया था । उसने उन सब की बातें सुन ली थीं ।

देखकर बाकी की तीन बहुएं भी सर से पांव तक कांप गयीं । जो कुछ भी वहां सामान पड़ा था, उसे वे अफ़रातफरी में छिपाने लगीं ।

"बड़ी अच्छी घी की गंध आ रही है! क्या बना रही थी?" सांस ने बहुओं की ओर तीखी नज़र से देखते हुए पूछा ।

"कुछ नहीं, मां जी! घी खत्म हो गया था । इसलिए मक्खन को तपा रही थी ।" बड़ी बहू ने कहा ।

दूसरी बहू ने बड़ी बहू की बात का समर्थन किया ।

"हाँ, घी की बात से मुझे याद आया—अधूरे रह गये मेरे इस सफर में एक अद्‌भुत घटना घटी ।" पार्वतीबाई ने पास की एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा ।

"कैसी घटना, माँ जी? हमें बताइए न!" कहती हुई चारों बहुएं पार्वतीबाई के इर्द-गिर्द जमा हो गयीं ।

तब पार्वतीबाई बोली: "मैं गाड़ी से जा रही थी न । जैसे ही गाड़ी मेरे भाई के गांव के इस ओर वाले जंगल में पहुंची, वैसे ही एक बैल के पांव में एक लंबा कांटा घुस गया । वह बैल अपना पांव उठा नहीं पा रहा था । उसे बहुत तकलीफ थी । इसलिए गाड़ी रोक दी गयी । गाड़ीवान बैल के पांव से कांटा निकालने की कोशिश कर रहा था । पास ही में एक मंडप था । मैं गाड़ी से उतर कर वहाँ पहुँच गयी । मैं कुछ देर वहां बैठी रही । अचानक मुझे वहां घी के बड़ों की गंध आयी । वह गंध मुझे बहुत अच्छी लगी ।" इतना कहकर पार्वतीबाई रुक गयी ।

घी के बड़ों की बात सुनते ही बड़ी बहू

उसने यह प्रश्न किया था ।

"हाँ, वही तो मैं बताने जा रही थी । वहाँ एक गेहुएँ रंग का नाग था जो अपना फन काढ़े नाच रहा था । उस का फन कैसा था, यह मुझे ज़रूर बताना चाहिए । इतना बड़ा! ठीक पूरी के आकार का! वह चमचमा रहा था!" पार्वतीबाई ने कहा ।

हलवा-पूरी पर जान देने वाली चौथी बहू की एकदम घिग्घी बंध गयी । फिर वह संभली और बोली, "इस के बाद क्या हुआ, माँ जी?"

"वही तो बताने जा रही हूं । इस नाग को देखकर मैं बेहद डर गयी । वापस मुड़कर मैंने दौड़ना चाहा । तभी वहां एक साधु प्रकट हुआ । उसके हाथ में केले के पत्तों में बंधी एक पोटली थी । मुझे घबरायी हुई देखकर वह हँस पड़ा और बोला– "यह देवता सर्प है । जहाँ भी यह होता है, वहाँ घी के बड़ों की गंध आती है । इस का फन हलवा-पूरी की तरह होता है । इसके अंडे सांप के अंडों के समान नहीं दिखते, बल्कि खोये की गुजियों की तरह दिखते हैं ।" –इतना कहकर उस साधु ने एकाएक वह पोटली खोली और नाग के सामने रख दी । और उस पोटली में, जानती हो, क्या था? – काजू की मिठाई ।"

"काजू की मिठाई?" अनायास दूसरी बहू सहमी-सी बोली ।

"हाँ, काजू की मिठाई! सर्प देवता जब उसे सूंघ लेता है, तब वह साधु उसे प्रसाद के रूप

घबरा गयी । उसके लिए अपने आप को संभाल पाना मुश्किल हो गया । पार्वतीबाई असलियत भांप गयी । वह फिर मंद-मंद मुस्कराने लगी और अपनी बात जारी रखते हुए बोली: "मैं जानना चाहती थी कि यह गंध आ कहां से रही है । इसलिए मैं उसी ओर चल दी । कुछ ही कदम आगे बढ़ी थी कि मुझे बड़े-बड़े अंडे दीख पड़े । मैं समझ नहीं पा रही थी कि ये कैसे अंडे हैं । मैं कुछ और आगे बढ़ी । अरे, यह तो खोये की गुजियाँ थीं । मेरा दिल धकधक कर रहा था ।" इतना कहकर पार्वतीबाई फिर रुक गयी ।

"वहाँ क्या देखा, माँ जी?" खोये की गुजिया का ज़िक्र सुनकर तीसरी बहू घबरा गयी थी । अपनी घबराहट छिपाने के लिए

में स्वीकार कर लेता है ।" पार्वतीबाई कहती गयी ।

सास की पूरी बात सुनने के बाद चारों बहुओं को विश्वास हो गया कि उसने उनकी गुप्त बातचीत को सुन लिया है, और इसी लिए उसने नाग वाली कहानी गढ़ी है । अब बहुओं के पास कोई चारा नहीं था, सिवाय इसके कि वे सास से माफ़ी मांगती । वे चारों सास के पांव पर गिर पड़ीं और क्षमा याचना करने लगीं ।

पार्वतीबाई ने बड़े स्नेह से अपनी चारों बहुओं को गले से लगाया और बोली– "ठीक है । पहले इस टोकरी को खोल कर देखो ।"

चारों बहुओं ने उस टोकरी को खोला और उसके भीतर की चीज़ें बाहर निकालीं । वाह! उनके चेहरे ख़ुशी से खिल उठे, क्योंकि वे सब तो वही पकवान थे जिनके लिए वे हर वक्त लालायित रहती थीं । वही घी से बने बड़े, वही काजू की मिठाई, वही खोये की गुजिया और वही हलवा-पूरी । बहुएँ सास पर गद्-गद् हो रही थीं ।

"आप कितनी अच्छी हैं, माँ जी! आपने हम पर कितना उपकार किया! आशा है, अब आपने हमें क्षमा कर दिया होगा," चारों बहुएँ गिड़गिड़ा रही थीं ।

"माफी तो मुझे तुम सब से मांगनी चाहिए ।" पार्वतीबाई बोली, "हमारे पास इतनी दौलत है; तब भी मैंने कंजूसी से काम लिया । तुम्हारी मर्ज़ी की मैं तुम्हें कोई चीज़ नहीं देती थी । इतना सब होते हुए भी मैंने तुम्हें तरसाया । इससे बढ़कर और क्या पाप हो सकता है! अब तुम्हारा जो मन हो, बनाओ और खाओ । मैं तुम्हें कभी नहीं टोकूंगी । पर हां, उसमें से थोड़ा सा मुझे भी खिला दिया करना ।" इतना कहकर पार्वतीबाई ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी ।

सास को हंसती देख बहुएँ भी ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगीं । उन के चेहरे अब एक-समान खिल रहे थे ।

मछली क्यों हंसी ?

पुराने ज़माने की बात है । कश्मीर में एक मछलियाँ बेचने वाली औरत थी । एक दिन वह मछलियों से भरी टोकरी लेकर राजभवन पहुंची । महारानी को मछलियाँ बहुत पसंद थीं । वह मछलियों को ग़ौर से देखने लगी । कुछ मछलियाँ टोकरी में उछल-कूद मचाये हुए थीं ।

"मुझे केवल मादा मछलियाँ ही चाहिए ।" महारानी ने मछुआरिन से कहा । फिर एक मछली की ओर इशारा करते हुए बोली, "यह मछली मादा है या नर?"

रानी ने जैसे ही यह प्रश्न किया, वह मछली हंसी । रानी असमंजस में पड़ गयी । उस मछुआरिन का उत्तर था कि उसकी सभी मछलियाँ नर ही हैं । इसलिए महारानी ने उसे लौटा दिया ।

पर महारानी उस हंसने वाली मछली के बारे में सोचती रही । उसे उसकी हंसी पर गुस्सा भी बहुत आया । वह मारे गुस्से के कोपभवन में चली गयी ।

महाराजा को जब महारानी के कोपभवन में जाने के बारे में पता चला तो वह बहुत परेशान हुआ । उसने कोशिश करके किसी तरह उसके कोप का कारण जाना, और अपने महामंत्री को बुलवाकर उससे कहा, "एक मछली की यह हिम्मत कि वह देश की महारानी पर हंसे! फौरन इसका कारण ढूँढ़ो । अगर एक महीने में मुझे इसके कारण का पता नहीं चला तो समझो तुम्हारा सर धड़ से अलग हो गया!"

महाराजा का यह विचित्र आदेश पाकर महामंत्री भी अब बहुत परेशान हो गया । उसने हर किसी से मंत्रणा की—पंडितों को बुलवाया, ज्योतिषियों को बुलवाया, झाड़फूंक करने वालों को बुलवाया, पर परिणाम कुछ न निकला । ऐसा विचित्र प्रश्न सुनकर हर कोई

कश्मीरी लोक कथा

अपना सर खुजलाने लगता ।

उधर महामंत्री बहुत निराश था । उसके जीवन की आखिरी घड़ियां जैसे कि उसके द्वार पर खटखट कर रही थीं । उसकी परेशानी होते-होते उसके बेटे तक भी पहुंच गयी । बेटा काफ़ी बुद्धिमान था । उसने अपने पिता को आश्वस्त किया कि वह इस प्रश्न का उत्तर ज़रूर ढूंढ़ेगा । फिर वह पिता से आज्ञा लेकर घर से निकल पड़ा ।

कुछ दिन की यात्रा के बाद उसकी भेंट एक बूढ़े किसान से हुई और दोनो सह-यात्री बन गये ।

काफी दूर तक वे ऐसे ही चलते रहे । फिर महामंत्रीपुत्र ने सुझाया कि क्यों न वे एक-दूसरे को अपने-अपने कंधे पर उठाकर चलें । किसान चुप राह ।

वे कुछ ही दूर और गये थे कि एक खेत को देखकर महामंत्रीपुत्र बोला, "अरे, फसल तो बिलकुल तैयार है । इसे अब़ तक क्यों नहीं खा लिया गया?"

इस बार भी किसान चुप रहा ।

खैर, दोनों ने एक नगर को भी पार किया और अब वे एक श्मशान में पहुंचे । श्मशान में एक लाश का दाह-संस्कार हो चुका, तो मृत व्यक्ति के रिश्तेदारों ने वहां खड़े और वहां से गुज़रने वाले लोगों में खाने की चीज़ें बांटीं । बूढ़े किसान और महामंत्रीपुत्र को भी उन लोगों ने खाने को दिया ।

अब दोनों साथी कुछ ही कदम आगे बढ़े थे कि महामंत्रीपुत्र रुका और फिर

चारों ओर देखते हुए बोला, "वाह! कितना भव्य नगर है यह!"

बूढा किसान महामंत्रीपुत्र की ऐसी ऊल-जुलूल बातें सुनने का आदी हो चुका था । इसलिए वह चुप ही रहा, और वे दोनों आगे बढ़ते रहे ।

वे थोड़ी दूर और गये थे कि उनके रास्ते में एक नाला पड़ा । किसान ने अपने जूते उतारकर अपने हाथ में ले लिये और कपड़ों को थोड़ा संभालकर नाला पार कर लिया । लेकिन महामंत्रीपुत्र ने इस सब की ओर ध्यान नहीं दिया और उसने वैसे ही नाले को पार किया ।

यात्रा अब खत्म हो चुकी थी । किसान अपने गाँव में पहुंच गया था । पर वह तो यही

समझे बैठा था कि उसके साथ यह जो लड़का आया है, बिलकुल बावला है । फिर भी उसने उसे अपने यहाँ खाने पर बुलाया ।

किसान से भोजन का निमंत्रण पाकर महामंत्रीपुत्र बोला, "मैं आपके घर ज़रूर आऊंगा, पर एक बार आप यह जांच ज़रूर करवा लीजिए कि क्या आपके घर के शहतीर काफी मज़बूत तो हैं न!'

इस पागल से तो बात करना ही बेकार है—किसान ने मन ही मन अपने से कहा, और फिर वह अकेला ही अपने घर चला आया । घर पहुंचकर उसने अपने बीवी-बच्चों को अपने साथ आये लड़के के बारे में बताया ।

किसान की बेटी ने यह सब ध्यान से सुना । वह भी काफी बुद्धिमान थी । पिता की बातें सुनकर वह बोली, "पिताजी, वह लड़का जो आपके साथ यहाँ आया है, बावला नहीं है, बल्कि बड़ा बुद्धिमान है । इसीलिए उसकी बातें आपकी समझ में नहीं आयीं । जब उसने कहा कि एक-दूसरे को अपने-अपने कंधों पर उठाकर चलें, तो इससे वह कहना यह चाहता था कि एक दूसरे को कथा-कहानी सुनाते हुए चलें, ताकि यात्रा का बोझ घट जाये । खेत को खा लिया जाने से उसका अभिप्राय यह था कि किसानों के लेनदेन अब तक इस फसल को कैसे हड़प नहीं कर पाये । जब श्मशान में कोई खिलानेवाला मिला तो उसने उसे नगर कहा । नाला पार करते समय पानी के भीतर किस चीज़ पर पैर पड़ेगा, इसका किसी को पता नहीं होता, इसलिए उस लड़के ने अपने जूते नहीं उतारे और न ही अपने कपड़े ऊपर सरकाये । वह सही मायनों में बुद्धिमान है । जब उसने हमारे घर के शहतीरों के मज़बूत होने की तरफ इशारा किया तो वह यह कहना चाहता था कि क्या हम उसका खर्च उठा पायेंगे । मैं ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति को ज़रूर अपना अतिथि बनाऊंगी ।"

किसान की बेटी ने एक छोटी सी कटोरी को घी से भरा, साथ में बारह चपातियाँ रखीं और दूध से एक बर्तन को भी लबालब भरा और उन्हें अपने नौकर के हाथ गाँव के बाहर ठहरे महामंत्रीपुत्र को भेजा । साथ में उसने एक चिट्ठी भी भेजी । चिट्ठी में लिखा था :

"मित्र, चंद्र संपूर्ण है । साल में बारह महीने हैं । सागर किनारा लाँघना चाह रहा है ।"

किसान का नौकर जब ये सब चीज़ें महामंत्रीपुत्र तक पहुंचाने के लिए लिये जा रहा था तो रास्ते में उसे अपना बेटा मिला । बेटे ने कुछ खाने को माँगा । बाप से रहा नहीं गया । उसने अपने हाथ की चीज़ों में से कुछ अपने बेटे को दे दीं और बाकी चीज़ें महामंत्रीपुत्र के पास ले गया ।

महामंत्रीपुत्र ने भोजन समाप्त किया और किसान की बेटी की चिट्ठी पढ़ी । फिर उसने उसका उत्तर लिखा और उसे उसी किसान के नौकर के हाथ किसान की बेटी को भिजवाया । उत्तर इस प्रकार था : "मित्र, अमावस का चांद था । इसलिए कहीं उसके दर्शन नहीं हुए । मुझे लगता है साल के ग्यारह महीने ही हैं । सागर का आधा पानी तो उड़ा हुआ था । फिर किनारा कैसे लांघता!"

किसान की बेटी ने जैसे ही चिट्ठी पढ़ी, वह अपने नौकर पर बरस पड़ी । बोली, "मैंने वह जो घी दिया था, उसका क्या हुआ? एक चपाती भी कहाँ उड़ गयी? फिर बर्तन का आधा दूध! वह सब कहाँ गया?"

नौकर की चोरी अब सामने आ गयी थी । नौकर ने भी कोई बात छिपायी नहीं । उसने सब कुछ साफ-साफ कबूल कर लिया ।

अब तक किसान को अपने सहयात्री की बुद्धिमत्ता का परिचय मिल गया था । वह फौरन अपने घर से निकला और स्वयं महामंत्रीपुत्र को बुलाकर अपने यहाँ लाया । महामंत्रीपुत्र और किसान की बेटी के बीच बहुत देर तक बात होती रही । आखिर, महामंत्रीपुत्र ने किसान की बेटी के सामने अपनी समस्या रखी और उससे जानना चाहा कि महारानी को देखकर मछली के हंसने का क्या कारण हो सकता है ।

किसान की बेटी ने उत्तर देने में एक क्षण भी नहीं लगाया । बोली, "ज़रूर महारानी के अंत:पुर में सब की आंख बचाकर कोई पुरुष रहता है!"

यह उत्तर सुनकर महामंत्रीपुत्र ताज्जुब में पड़ गया । उसने कहा, "यदि यह बात

सही है तो इसे सही साबित करने में क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो? इससे मेरे पिता की जान बच जायेगी ।''

महामंत्रीपुत्र की बात सुनकर किसान की बेटी ने तुरंत उसकी मदद करने के लिए हामी भर दी और उसके साथ राजधानी के लिए चल पड़ी ।

दोनों जब राजधानी पहुंचे तो वे सीधे महामंत्री के घर गये । किसान की बेटी की बात सुनकर महामंत्री बड़ा खुश हुआ । उसने महाराजा को मछली के हंसने का कारण जा बताया ।

''इसका प्रमाण?'' महाराजा ने प्रश्न किया ।

महामंत्री फिर किसान की बेटी के पास लौटा । किसान की बेटी ने सुझाव दिया कि एक खंदक खुदवायी जाये और उसमें महारानी की सभी परिचारिकाओं को कूदने के लिए कहा जाये ।

अलबत्ता, खंदक खुदवायी गयी और सभी परिचारिकाओं को उसमें कूदने के लिए कहा गया । परिचारिकाओं ने जब यह सुना तो वे घबरा गयीं और उन्होंने कूदने से इन्कार कर दिया । उनमें केवल एक ही परिचारिका ऐसी थी जिसने खंदक में फौरन छलांग लगा दी । किसान की बेटी ने कहा, ''यह स्त्री नहीं, पुरुष है ।''

किसान की बेटी ने जो कहा था, वह ठीक निकला । वह परिचारिका सचमुच पुरुष ही थी । इस धोखे का पता चलने पर महारानी बहुत खुश हुई ।

पुरुष परिचारिका को तो सज़ा मिलनी ही थी, महामंत्री को महाराजा ने ढेर सारे पुरस्कार दिये ।

और हाँ, महामंत्रीपुत्र और किसान की बेटी का विवाह भी खुशी-खुशी संपन्न हो गया ।

सबसे छोटा डॉइनोसार

सभी डॉइनोसार आकार में बहुत बड़े नहीं होते । उनमें कुछ छोटे भी होते हैं । अब तक जिस छोटे से छोटे डॉइनोसार का पता चला है, वह है कंपोग्नाथस, जो पक्षी के समान होता है । उसकी लंबाई केवल दो फुट होती है ।

इस छिपे खतरे से सावधान!
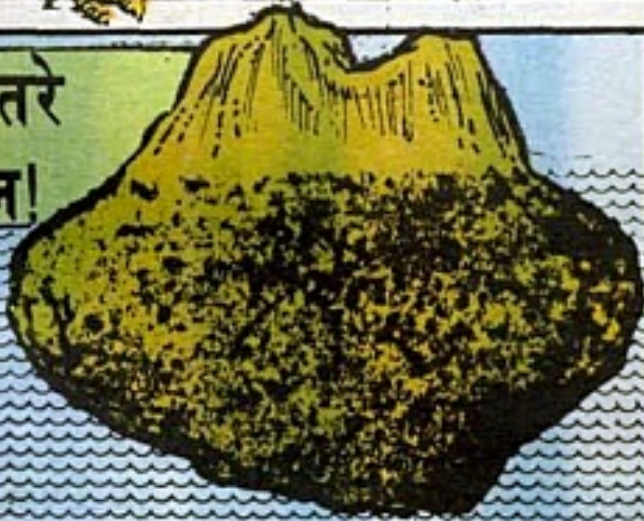
हिम के घनत्व और सागर के पानी के घनत्व में बहुत कम अंतर होता है । यदि कोई हिम-पर्वत सागर में तैर रहा हो तो समझ लो कि उसका आठवां हिस्सा ही केवल पानी के ऊपर तैर रहा है, बाकी के सात हिस्से पानी में हैं ।

कांटों का भोजन

गैलापगोस (प्रशांत महासागर) नामक द्वीपों में छिपकलियां (लैंड इगुआना) पायी जाती हैं । वे कांटे तो खाती ही हैं, उनके साथ-साथ थूहर के पौधों (केक्टस) को भी खा जाती हैं ।

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 93.00 वायु सेवा से रु. 168.00

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 99.00 वायु सेवा से रु. 168.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां नवम्बर १९९१ के अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

S. S. Ghatege

K. P. A. Swamy

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० सितम्बर '९१ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

जुलाई १९९१ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : **भूख लगी, मुझे कुछ खिलाओ!**

द्वितीय फोटो : **इच्छा नहीं, मुझे मत सताओ!!**

प्रेषक : ऋषि प्रकाश, द्वारा त्रिनगर देवाराम पार्क, दिल्ली-११००३५

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०००२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

A special contest for JUNIOR QUEST subscribers!

Hi kids! What's your DREAM WORLD like? Is it a world where stormy seas turn into milk and honey? And dark clouds become beautiful butterflies?

Well, here's your chance to say why friends, animals, flowers, laughter and other beautiful things make this world a great place to live in!

Just make a colourful picture of your own DREAM WORLD. Use paints, colour pencils, crayons or felt pens. (Maximum paper size 20 cm.x 45 cm.) On another paper complete the following : " The world would be a better place if ....". (Less than 50 words, in English only).

Remember, even the most impossible dream could be a winner. And some day, perhaps,it could even come true!

Last date - September 30, 1991

Mail your entries to:
DREAM WORLD CONTEST
C/O Junior Quest, Chandamama Building,
Vadapalani, Madras 600 026.

DREAM WORLD PRIZES

* One free trip to the USSR and back
* 50 Gift cheques of Rs 100 each
* Extra-special JQ T-shirts

RULES • Contest open to all current Junior Quest subscribers, and to all those who subscribe before September 30, 1991. • All entries must be accompanied by the special Dream World Contest coupon, available in the July, August and September 1991 issues of Junior Quest.Along with your current subscription number or a subscription coupon. • In case of a tie, a lucky draw decides who wins the free trip to the USSR. • The decision of the judges will be final and binding • We will not be responsible for entries lost or damaged. Incomplete entries will be disqualified. • Entries become the property of the Chandamama Vijaya Combines Publications Division, with the right to publish any of the winning entries. • The results will be published in a future issue of Junior Quest. • The winner is responsible for all passport and Reserve Bank formalities.

HTA 7832

FREE!
BUNNY TEETH
INSIDE EVERY 100 GMS
POUCH OF COOKIES
मिठाई में
नारियल
मुँह में
हलचल
nutrine
COOKIES
nutrine
COOKIES
बच्चे झूमें-गायें, मौज मनायें
कोकानाका कुकीज
THE FINEST, WIDEST RANGE
Visesh/NC/9090/Hin